

# भुगतान संतुलन

आज के वैश्वीकरण के दौर में कोई भी देश विश्व अर्थव्यवस्था में घटित घटनाओं से पूर्णतया अपने को अलग नहीं रख सकता और भारत भी इसका अपवाद नहीं है। चूंकि देश विश्व में तेजी से एकाकार हो रहा है, इसलिए यह विदेश के घटनाक्रमों से नहीं बच सकता। यूरो जोन संकट के सामने आने और एक वैश्विक अर्थव्यवस्था में व्याप्त अनिश्चितता ने भारतीय अर्थव्यवस्था विकास में कमी, उच्च मौजूदा लेखा घाटा तथा घटते पूंजी अन्तर्प्रवाह के जरिए प्रभावित किया है। संकट का यह संक्रमण जो 2008 से है, पूर्णतया भुगतान संतुलन (बीओपी) चैनल के माध्यम से रहा है। राजकोषीय 2011-12 की तीसरी-तिमाही में निर्यात वृद्धि में गिरावट आयी है जबकि आयात ऊंचा बना रहा, ऐसा आंशिक तौर पर निरन्तर अन्तरराष्ट्रीय तेल कीमतों के ऊंची बने रहने की वजह से हुआ। साथ ही विदेशी संस्थागत निवेश प्रवाह में गिरावट आयी जिससे पूंजी लेखे में दबाव पड़ा और रुपए की विनिमय दर 15 दिसम्बर 2011 को अब तक के 54.23 प्रति अमरीकी डालर के सबसे निचले स्तर पर पहुंच गयी।

6.2 तथापि, स्थिति में 2012 में सुधार के संकेत दिखायी दिए हैं, भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के हस्तक्षेप, घरेलू बाजार में विदेशी मुद्रा की आपूर्ति बढ़ाने के उपायों, सट्टेबाजी की गतिविधियों को रोकने सम्बन्धी कदमों तथा भारत के आर्थिक दृष्टिकोण में सामान्य सुधार की वजह से जनवरी 2012 में रुपए के मूल्य में 2.6 तक की वृद्धि हुई। विदेशी संस्थागत निवेश के अन्तर्प्रवाह की वापसी हुई जिसने भुगतान संतुलन तथा विनिमय दर को सहायता प्रदान की। तथापि, वैश्विक परिदृश्य ग्रीस की स्थिति के लड़खड़ाने तथा बढ़ते जोखिम से अनिश्चित बना हुआ है जिसका विस्तार पुर्तगाल अर्थव्यवस्था पर पड़ा। ऐसे परिदृश्य का भारतीय अर्थव्यवस्था में गंभीर प्रभाव पड़ सकता है।

## भुगतान संतुलन

6.3 भुगतान संतुलन मैनुअल (पांचवां संस्करण) के अनुसार बीओपी में मौजूदा खाता, पूंजी खाता, भूल-चूक लेनी-देनी तथा विदेशी मुद्रा प्रारक्षित निधियों में परिवर्तन शामिल है, बीओपी के मौजूदा खाता के अन्तर्गत, लेन-देन को पण्य (निर्यात तथा आयात) और अदृश्य लेखों में वर्गीकृत किया जाता है। अदृश्य लेन-देनों को पुनः तीन श्रेणियों में बांटा जाता है। पहले संघटक में सेवाओं को शामिल किया जाता है और जिसमें यात्रा, परिवहन, बीमा, अन्यत्र असम्मिलित सरकार (जीएनआईई), और विविध

शामिल है। विविध सेवाओं में संचार, निर्माण, वित्तीय, सॉफ्टवेयर, समाचार एजेंसी, रायल्टी, प्रबन्ध तथा कारोबार सेवाओं को शामिल किया जाता है। अदृश्य लेखों का दूसरा भाग आय है। अन्तरण (अनुदान, उपहार, विप्रेषण आदि) जिसका कोई मुआवजा नहीं होता, अदृश्य लेखों की तीसरी श्रेणी है।

6.4 पूंजी खाते के अन्तर्गत, पूंजी अन्तर्प्रवाह को लिखत (ऋण अथवा इक्विटी) तथा परिपक्वता (अल्प अथवा दीर्घावधि) द्वारा वर्गीकृत किया जा सकता है। पूंजी खाते के मुख्य संघटकों में विदेशी निवेश, ऋण तथा बैंकिंग पूंजी शामिल है। विदेशी निवेश में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (एफडीआई) और पोर्टफोलियो निवेश शामिल है जिसमें विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) का निवेश तथा अमरीकी निक्षेपागार प्राप्ति/वैश्विक निक्षेपागार प्राप्ति (एडीआर/जीडीआर) सम्मिलित है जो ऋण भिन्न देयताओं को सूचित करती हैं जबकि ऋणों (विदेशी सहायता, विदेशी वाणिज्यिक उधार (ईसीबी) तथा व्यापार क्रेडिट) और अप्रवासी भारतीयों की जमा राशियों सहित बैंकिंग पूंजी ऋण देयताएं हैं।

6.5 2010-11 के दौरान बीओपी घटनाक्रमों की विशेषताएं हैं: उच्च निर्यात, आयात, व्यापार तथा मौजूदा खाता घाटा (सीएडी) और निरपेक्ष रूप में निवल अदृश्य अधिशेष तथा पूंजी प्रवाह में

वृद्धि जो राजकोषीय 2009-10 की तुलना में है। निर्यात तथा आयातों दोनों ने 2010-11 में पिछले वर्ष की तुलना में, क्रमशः 37.3 प्रतिशत तथा 26.8 प्रतिशत की पर्याप्त वृद्धि दिखायी। व्यापार घाटे में 2009-10 की तुलना में 2010-11 में 10.5 प्रतिशत तक बढ़ोतरी हुई। तथापि, सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के अनुपात के रूप में उसमें 2010-11 में 7.8 प्रतिशत तक सुधार दिखाई दिया। (2009-10 में 8.7 प्रतिशत)। निवल अदृश्य शेष राशियों में सुधार दिखायी दिया जिसने 2010-11 में 5.8 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की, सीएडी 2010-11 में बढ़कर 45.9 बिलियन अमरीकी डालर तक हो गया जो 2009-10 में 38.2 बिलियन अमरीकी डालर था लेकिन 2009-10 में 2.8 प्रतिशत की तुलना में 2010-11 में सघन अनुपात के रूप में 2.7 प्रतिशत होकर मामूली सुधार हुआ। 2010-11 में 62.0 बिलियन अमरीकी डालर पर

निवल पूंजी प्रवाह 20.1 प्रतिशत तक ऊंचा था जबकि 2009-10 में यह 51.6 बिलियन अमरीकी डालर था। ऐसा विदेशी वाणिज्यिक उधार, विदेशी सहायता, अल्पावधि व्यापार ऋण, एनआरआई जमा राशियों तथा बैंक पूंजी के अन्तर्गत-उच्च अन्तःप्रवाह की वजह से हुआ। 2010-11 में 45.9 बिलियन अमरीकी डालर के सीएडी 62.0 बिलियन अमरीकी डालर के पूंजी खाता अधिशेष द्वारा वित्तपोषित किया गया और इसके परिणामस्वरूप, विदेशी मुद्रा भण्डार में 13.1 बिलियन अमरीकी डालर (2009-10 में 13.4 बिलियन अमरीकी डालर) की वृद्धि हुई।

6.6 2011-12 की पहली छमाही (अप्रैल-सितम्बर 2011) के दौरान निरपेक्ष रूप में सीएडी पिछले वर्ष की तदनुसूची अवधि की अपेक्षा अधिक थी, ऐसा मुख्यतः उच्च व्यापार घाटे की वजह से हुआ। निरपेक्ष रूप में निवल पूंजी प्रवाह 2011-12 की पहली

सारणी 6.1 : भुगतान संतुलन : सारांश							(मिलियन अमरीकी डालर)	
क्र.स.	मद	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10	2010-11 <sup>आ.सं.</sup>	2010-11 प.छ. (अप्रैल- सित. 2010) <sup>आ.सं.</sup>	2011-12 प.छ. (अप्रैल- सित. 2011) <sup>प्रा.</sup>
1	2	3	4	5	6	7	8	9
<b>I चालू खाता</b>								
1.	निर्यात	128888	166162	189001	182442	250468	107331	150909
2.	आयात	190670	257629	308520	300644	381061	176213	236674
3.	व्यापार संतुलन	-61782	-91467	-119519	-118203	-130593	-68883	-85765
4.	अदृश्य (निवल)	52217	75731	91604	80022	84647	39283	52923
	क. कारक भिन्न सेवाएं	29469	38853	53916	36016	48816	21517	31060
	ख. आय	-7331	-5068	-7110	-8038	-17309	-8238	-9025
	ग. अन्तरण	30079	41945	44798	52045	53140	26004	30887
5.	वस्तु तथा सेवा शेष	-32313	-52614	-65603	-82187	-81777	-47366	-54705
6.	चालू खाता शेष	-9565	-15737	-27914	-38181	-45945	-29599	-32842
<b>II. पूंजी लेखा</b>								
1	पूंजी लेखा शेष	45203	106585	7395	51634	61989	38950	41061
	I. विदेशी सहायता (निवल)	1775	2114	2439	2890	4941	3036	705
	II. विदेशी वाणिज्यिक उधार (निवल)	16103	22609	7861	2000	12506	5674	10592
	III. अल्पावधि ऋण	6612	15930	-1985	7558	10990	6937	5940
	IV. बैंकिंग पूंजी (निवल) जिसमें	1913	11759	-3245	2083	4962	839	19344
	अनिवासी-जमा राशियां (निवल)	4321	179	4290	2922	3238	2163	3937
	V. विदेशी निवेश (निवल) जिसमें	14753	43326	8342	50362	39652	30836	13657
	क. एफडीआई (निवल)	7693	15893	22372	17966	9360	7040	12311
	ख. पोर्टफोलियो (निवल)	7060	27433	-14030	32396	30293	23796	1346
	VI. रुपया ऋण सेवा	-162	-122	-100	-97	-68	-16	-32
	VII. अन्य प्रवाह (निवल)	4209	10969	-5916	-13162	-10994	-8356	-9145
	III. भूल-चूक	968	1316	440	-12	-2993	-2320	-2500
	IV. समग्र शेष	36606	92164	-20080	13441	13050	7030	5719
	V. प्रारक्षित							
	निधियां ( वृद्धि (-) / कमी (+) )	(-) 36606	(-) 92164	20080	(-) 13441	(-) 13050	(-) 7030	(-) 5719

स्रोत: भारतीय रिजर्व बैंक

आ.सं. : आंशिक रूप से संशोधित

प्रा. : प्राथमिक

छमाही के दौरान 2010-11 की तदनुरूपी अवधि से तुलना करने पर उच्च था। (सारणी 6.1)

## मौजूदा खाता

### पण्य व्यापार

6.7 2010-11 के दौरान, पहली बार निर्यात 200 बिलियन अमरीकी डालर के स्तर को पार कर गया, इसमें 37.5 प्रतिशत की वृद्धि होकर यह 2009-10 में 182.2 बिलियन अमरीकी डालर से बढ़कर 250.5 बिलियन अमरीकी डालर हो गया। यह बढ़ोतरी मुख्यतः इन्जीनियरिंग वस्तुओं, पेट्रोलियम उत्पादों, रत्न और आभूषण तथा रसायन एवं सम्बद्ध उत्पादों की वजह से हुई। निर्यात में यह सुधार निर्यात बॉस्केट के विन्यास में संरचनात्मक परिवर्तन की वजह से था जो श्रम-सघन विनिर्माण से उच्च मूल्य वर्धित इन्जीनियरिंग तथा पेट्रोलियम उत्पादों के साथ-साथ विकासशील देशों के साथ निर्यात गंतव्य स्थलों के विविधीकरण में देखा गया। यह हाल के वर्षों में हमारा सबसे बड़ा निर्यात बाजार बन गया है।

6.8 निर्यात की भांति, आयात ने भी, 2010-11 में 26.7 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की और यह 381.1 बिलियन अमरीकी डालर हो गया जबकि यह 2009-10 में 300.6 बिलियन अमरीकी डालर था। तेल निर्यात ने 2010-11 में 19.3 प्रतिशत की बढ़ोतरी दिखायी (जो एक वर्ष पूर्व 7.0 प्रतिशत की गिरावट के मुकाबले है) और इस अवधि दौरान जो कुल आयात का 28.1 प्रतिशत आंका गया (2009-10 में 30.2 प्रतिशत)। आयात में बढ़ोतरी मुख्यतः पेट्रोलियम तथा सम्बद्ध उत्पादों एवं मोती तथा कम कीमती रत्नों की वजह से हुई। अन्तरराष्ट्रीय व्यापार सम्बन्धी अध्याय में विस्तृत विश्लेषण दिया गया है।

6.9 व्यापार घाटे में बढ़ोतरी होकर यह 10.5 प्रतिशत तक पहुंच कर 130.6 बिलियन अमरीकी डालर हो गया जबकि 2009-10 में यह 118.2 बिलियन अमरीकी डालर था। ऐसा मुख्यतः शानदार घरेलू आर्थिक निष्पादन की पृष्ठभूमि में निर्यात के सापेक्ष आयात में उच्च बढ़ोतरी के कारण हुआ। 2010-11 में तथापि, सघट के सन्दर्भ में, व्यापार घाटे में सुधार देखा गया जो व्यापार घाटे की तुलना में बाजार कीमतों पर सघट में सापेक्षतया उच्च वृद्धि के कारण है। 2009-10 में 8.7 प्रतिशत से 2010-11 में 7.8 प्रतिशत हो गया।

6.10 2011-12 की पहली छमाही के दौरान भारत का सीएडी का विस्तार भारत और शेष विश्व के बीच विकास असमानता के प्रभाव के प्रदर्शित करता है। भारत के निर्यात तथा आयात की बढ़ोतरी ने 2010-11 में गति पकड़ी जो 2011-12 की पहली छमाही के दौरान जारी रही।

6.11 2011-12 की पहली छमाही के दौरान, निर्यात में 2010-11 की पहली छमाही के दौरान 107.3 बिलियन अमरीकी डालर से बढ़ोतरी होकर यह 150.9 बिलियन अमरीकी डालर हो गया जिसने 2009-10 की पहली छमाही की तुलना में 2010-11 की पहली

छमाही में 30 प्रतिशत की तुलना में 40.6 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की। 2011-12 में निर्यात मुख्यतः इन्जीनियरिंग वस्तुओं तथा पेट्रोलियम उत्पादों जैसे मर्चों में आयी तेजी की वजह से हुआ, निर्यात निष्पादन में बढ़ोतरी सरकारी नीति के समर्थन के फलस्वरूप हुई प्रतीत होता है जिसने इन्जीनियरिंग तथा पेट्रोलियम दोनों में उच्च मूल्य वर्धित उत्पादों के विविधीकरण तथा सम्पूर्ण विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में गंतव्य स्थलों पर फोकस किया। व्यापार नीति फोकस बाजार स्कीम (एफएमएस), फोकस प्रोडक्ट स्कीम (एफपीएस) तथा ड्यूटी इन्टाइटिलमेंट पासबुक स्कीम (डीईपीएस) जैसी योजनाओं के जरिए निर्यात को सहायता देने की रही है।

6.12 236.7 बिलियन अमरीकी डालर के आयात ने 2011 की पहली छमाही के दौरान 34.3 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की जो 2009-10 की पहली छमाही की तुलना में 2010-11 की पहली छमाही में 27.35 प्रतिशत की बढ़ोतरी के मुकाबले है। स्वर्ण तथा चांदी की कीमतों में बढ़ोतरी सहित कच्चे तेल की कीमतों में बढ़ोतरी ने 2011-12 की पहली छमाही के दौरान बढ़ते आयात बिल में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।

6.13 व्यापार घाटे में 2011-12 की पहली छमाही के दौरान 24.5 प्रतिशत तक वृद्धि होकर यह 85.8 बिलियन अमरीकी डालर (सघट का 9.4 प्रतिशत) हो गया जो पिछले वर्ष की पहली छमाही में 68.9 बिलियन अमरीकी डालर (सघट का 8.9 प्रतिशत) हो गया। यह 2011-12 की पहली छमाही में आयात की तुलना में उच्च निर्यात वृद्धि के बावजूद हुआ।

### अदृश्य लेखा

6.14 भुगतान संतुलन का अदृश्य लेखा सेवाओं में अन्तरराष्ट्रीय व्यापार, अनिवासियों की परिसम्पत्तियों तथा देयताओं से सम्बद्ध आय, श्रम तथा सम्पत्ति तथा सीमा पार अन्तरण, मुख्यतः कामगारों का विप्रेषण से सम्बद्ध लेन-देनों के संयुक्त प्रभावों को प्रदर्शित करता है।

6.15 2010-11 में सेवाओं के निर्यात तथा आयात दोनों में तीव्र बढ़ोतरी देखी गयी जिसमें व्यापार, परिवहन, बीमा, जीएनआईई और विविध सेवाएं (सॉफ्टवेयर सेवाएं, व्यापार सेवाएं, वित्तीय सेवाएं तथा संचार सेवाएं) शामिल है। सेवा निर्यात 38.4 प्रतिशत की वृद्धि होकर यह 2009-10 में 96.0 बिलियन अमरीकी डालर से बढ़कर 2010-11 में 132.9 बिलियन अमरीकी डालर हो गया। व्यावसायिक सेवाओं में 113.3 प्रतिशत की बढ़ोतरी होकर यह 2009-10 में 11.3 बिलियन अमरीकी डालर से 2010-11 में 24.8 बिलियन अमरीकी डालर हो गया तथा वित्तीय सेवाओं में 75.7 प्रतिशत तक बढ़ोतरी होकर यह 2010-11 में 2009-10 में 3.7 बिलियन अमरीकी डालर से 6.5 बिलियन अमरीकी डालर हो गया। सॉफ्टवेयर सेवाओं के कारण प्राप्तियों में बढ़ोतरी देखी गयी, ऐसा मुख्यतः कार्यक्षमता में सुधार और विविधीकृत निर्यात गंतव्य स्थलों के कारण हुआ। सॉफ्टवेयर प्राप्तियां 55.5 बिलियन अमरीकी डालर थी जो कुल सेवा प्राप्तियों का 41.8 प्रतिशत है और जिसमें 2010-11 में 11.7 प्रतिशत की बढ़ोतरी देखी गयी (पिछले वर्ष

7.3 प्रतिशत)। सॉफ्टवेयर प्राप्तियां कुल मौजूदा प्राप्तियों का 12.4 प्रतिशत थी। निवल सेवा निर्यात में 2010-11 में 48.8 बिलियन अमरीकी डालर की बढ़ोतरी हुई जो 2009-10 में 36.0 बिलियन अमरीकी डालर थी जिसने 35.5 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की।

6.16 निजी अन्तरण प्राप्तियों जिसमें मुख्यतः विदेशों में कार्यरत भारतीयों से विप्रेषण शामिल है, में भी 3.7 प्रतिशत तक वृद्धि हुई जो पिछले वर्ष में 53.6 बिलियन अमरीकी डालर से बढ़कर 2010-11 में 55.6 बिलियन अमरीकी डालर हो गयीं। निजी अन्तरण प्राप्तियां 2010-11 में मौजूदा प्राप्तियों का 12.4 प्रतिशत हैं (2009-10 में 15.5 प्रतिशत)। प्राप्तियों की अन्य श्रेणियों (परिवहन, बीमा, संचार तथा जीएनआईई) में मामूली बढ़ोतरी देखी गयी।

6.17 अदृश्य भुगतानों में 2010-11 में 36.2 प्रतिशत तक बढ़ोतरी हुई जो 2009-10 में 83.4 बिलियन अमरीकी डालर से बढ़कर 2010-11 में 113.6 बिलियन अमरीकी डालर हो गयी। अदृश्य भुगतानों में हुई 36.2 प्रतिशत की बढ़ोतरी ने 2010-11 में दर्ज की गयी 21.3 प्रतिशत की वृद्धि को पीछे छोड़ दिया है। अदृश्य भुगतानों में बढ़ोतरी मुख्यतः व्यापार सेवाओं, वित्तीय सेवाओं यात्रा

तथा निवेश आय के कारण हुई। भले ही सेवा क्षेत्र निर्यातों के कारण अधिशेष 2010-11 में काफी अधिक था, लेकिन अन्तरणों के कारण निवल प्राप्तियों में वृद्धि मामूली थी और इसी अवधि के दौरान निवेश आय के निवल अन्तर्प्रवाह में बढ़ोतरी हुई। परिणामस्वरूप, निवल अदृश्य शेष (भुगतान को घटाकर प्राप्तियां) ने 5.5 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज कर यह 2010-11 में 84.6 बिलियन अमरीकी डालर तक हो गया जबकि 2009-10 में यह 80 बिलियन अमरीकी डालर था। सघड के अनुपात के रूप में, निवल अदृश्य शेष 2009-10 में 5.9 प्रतिशत से घटकर 2010-11 में 5.0 प्रतिशत हो गया। इस स्तर पर, अदृश्य अधिशेष ने व्यापार घाटे के लगभग 64.8 प्रतिशत का वित्त पोषण किया जबकि 2009-10 के दौरान यह 67.7 प्रतिशत था।

6.18 2011-12 की पहली छमाही के दौरान अदृश्य प्राप्तियों ने 17.4 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज कर यह 106 बिलियन अमरीकी डालर हो गया जबकि 2010-11 की इसी अवधि के दौरान यह 90.3 बिलियन अमरीकी डालर था। अदृश्य प्राप्तियों की सभी मुख्य श्रेणियां अर्थात् सेवाएं, अन्तरण, तथा आय ने 2011-12 की पहली छमाही के दौरान बढ़ोतरी दिखायी। सेवाओं के निर्यात में 2011 की पहली छमाही के दौरान मामूली बढ़ोतरी दर्ज होकर यह 17.1 प्रतिशत हो गया जबकि 2010 की पहली छमाही के दौरान यह

सारणी 6.2 : वैदेशिक क्षेत्र के चयनित संकेतक								
क्रम सं.	मदें	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10	2010-11 <sup>आ.सं.</sup>	2010-11 प.छ. (अप्रैल-सित्त. 2010) <sup>आ.सं.</sup>	2011-12 प.छ. (अप्रैल-सित्त. 2011) <sup>प.</sup>
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1.	निर्यात वृद्धि-बीओपी (%)	22.6	28.9	13.7	-3.5	37.3	30.0	40.6
2.	आयात वृद्धि-बीओपी (%)	21.4	35.1	19.8	-2.6	26.7	27.3	34.3
3.	कारक भिन्न सेवाओं का विकास (जमा)	28.0	22.4	17.3	-9.4	38.4	32.7	17.1
4.	कारक-भिन्न सेवाओं का विकास (ऋण)	28.5	16.2	1.1	15.3	40.0	48.3	1.0
5.	निर्यात/आयात-बीओपी (प्रतिशत)	67.6	64.5	61.3	60.7	65.7	60.9	63.8
6.	निर्यात/आयात वस्तुएं और सेवाएं (प्रतिशत)	86.2	83.0	81.8	77.2	82.4	77.7	80.0
7.	एफईआर का आयात कवर (महीनों की संख्या)	12.5	14.4	9.8	11.1	9.6	10.0	7.9
8.	बाह्य सहायता (निवल/टीसी) (%)	3.9	2.0	33.0	5.6	8.0	7.8	1.7
9.	ईसीबी निवल/टीसी (%)	35.6	21.2	106.3	3.9	20.2	14.6	25.8
10.	एनआर निक्षेप/टीसी (%)	9.6	0.2	58.0	5.7	5.2	5.6	9.6
सघड एमपी के प्रतिशत के अनुसार								
11.	निर्यात	13.6	13.4	15.2	13.4	14.8	13.9	16.5
12.	आयात	20.1	20.8	25.0	22.0	22.6	22.8	25.8
13.	व्यापार सन्तुलन	-6.5	-7.4	-9.7	-8.7	-7.8	-8.9	-9.4
14.	अदृश्य अधिशेष	5.5	6.1	7.5	5.9	5.0	5.1	5.8
15.	वस्तु और सेवा शेष	-3.4	-4.2	-5.3	-6.0	-4.9	-6.1	-6.0
16.	चालू लेखा शेष	-1.0	-1.3	-2.3	-2.8	-2.7	-3.8	-3.6
17.	ईसीबी	1.7	1.8	0.6	0.1	0.7	0.7	1.2
18.	विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (निवल)	0.8	1.3	1.8	1.3	0.6	0.9	1.3
19.	पोर्टफोलियो निवेश (निवल)	0.7	2.2	-1.2	2.4	1.8	3.1	0.1
20.	जोड़ पूंजी लेखा (निवल)	4.7	8.6	0.5	3.8	3.7	5.0	4.5

स्रोत : भारतीय रिजर्व बैंक आ.सं. : आंशिक रूप से संशोधित प्रा. : प्राथमिक  
 एफईआर: विदेशी मुद्रा भंडार टीसी: कुल पूंजीगत प्रवाह (निवल)  
 सघड एमपी: मौजूदा बाजार मूल्यों पर सकल घरेलू उत्पाद।

32.7 प्रतिशत था, जबकि आयात में बढ़ोतरी 2011 की पहली छमाही के दौरान 1.0 प्रतिशत के अत्यधिक निचले स्तर पर थी जो 2010 की पहली छमाही के दौरान 48.3 प्रतिशत के मुकाबले है। निवल आधार पर, सेवा अधिशेष में 2011 की पहली छमाही में 31.1 बिलियन अमरीकी डालर तक बढ़ोतरी हुई जो पिछले वर्ष की इसी अवधि में 21.5 बिलियन अमरीकी डालर की तुलना में है। निवेश आय प्राप्तियों में 3.8 प्रतिशत तक गिरावट देखी गयी जो 2011-12 की पहली छमाही के दौरान 4.2 बिलियन अमरीकी डालर थी जबकि भुगतान 13.6 बिलियन अमरीकी डालर था। (पिछले वर्ष के 12.2 बिलियन अमरीकी डालर), अन्तरण प्राप्तियों जिसमें मुख्यतः निजी अन्तरण शामिल है, में 2011-12 की पहली छमाही के दौरान 32.3 बिलियन अमरीकी डालर (पिछले वर्ष 27.2 बिलियन अमरीकी डालर) की बढ़ोतरी हुई।

6.19 2011-12 की पहली छमाही के दौरान 53.0 बिलियन अमरीकी डालर के अदृश्य भुगतानों ने 2010-11 की पहली छमाही में 51.0 बिलियन अमरीकी डालर की तुलना में 3.9 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की, निवल अदृश्य शेष (भुगतान को घटाकर प्राप्तियां) ने 2011-12 की पहली छमाही में 34.6 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज कर यह 52.9 बिलियन अमरीकी डालर (स.घ.उ. का 5.8 प्रतिशत) हो गया जबकि पिछले वर्ष की पहली छमाही में यह 39.3 बिलियन अमरीकी डालर (स.घ.उ. का 5.1 प्रतिशत) था। इस स्तर पर, अदृश्य अधिशेष ने 2011 की पहली छमाही के दौरान व्यापार घाटे का लगभग 62.0 प्रतिशत का वित्तपोषण किया जबकि पिछले वर्ष की इसी अवधि के दौरान यह 57.0 प्रतिशत था।

6.20 वस्तु और सेवा घाटे (अर्थात् व्यापार शेष तथा सेवाएं) में मामूली कमी देखी गयी जो 2010-11 के दौरान 81.8 बिलियन अमरीकी डालर (स.घ.उ. का 4.9 प्रतिशत) हो गया जबकि 2009-10 में यह 82.2 बिलियन अमरीकी डालर (स.घ.उ. का 6.0 प्रतिशत) था। राजकोषीय 2011-12 में यह बढ़कर पहली छमाही तक 54.7 बिलियन अमरीकी डालर हो गया जबकि पिछले

वर्ष की इसी अवधि के दौरान यह 47.4 बिलियन अमरीकी डालर था। ऐसा व्यापार घाटे में बढ़ोतरी के कारण हुआ। तथापि, सघउ के अनुपात के रूप में, इसमें मामूली गिरावट होकर यह 2011-12 (पहली छमाही तक) 6.0 प्रतिशत हो गया जबकि 2010-11 (पहली छमाही तक) में यह 6.1 प्रतिशत था। (सारणी 6.2)

### मौजूदा लेखाशेष

6.21 सीएडी 2009-10 में 38.2 बिलियन अमरीकी डालर से बढ़कर 2010-11 में 45.9 बिलियन अमरीकी डालर हो गया। मुख्यतः उच्च व्यापार घाटे के कारण निवल अदृश्यों में सुधार के बावजूद ऐसा हुआ, तथापि, सघउ के अनुपात के रूप में, सीएडी में 2010-11 में मामूली सुधार होकर यह 2.7 प्रतिशत हो गया जबकि 2009-10 में यह 2.8 प्रतिशत था (चित्र 6.1)

6.22 सीएडी 2011-12 की पहली छमाही में बढ़कर 32.8 बिलियन अमरीकी डालर हो गया जबकि 2010-11 की इस अवधि के दौरान यह 29.6 बिलियन अमरीकी डालर था, ऐसा मुख्यतः उच्च व्यापार घाटे की वजह से हुआ। सघउ के प्रतिशत के रूप में, यह 2011-12 की पहली छमाही के दौरान 3.6 प्रतिशत पर कुछ मामूली था जबकि पिछले वर्ष की पहली छमाही में यह 3.8 प्रतिशत था (चित्र 6.2)।

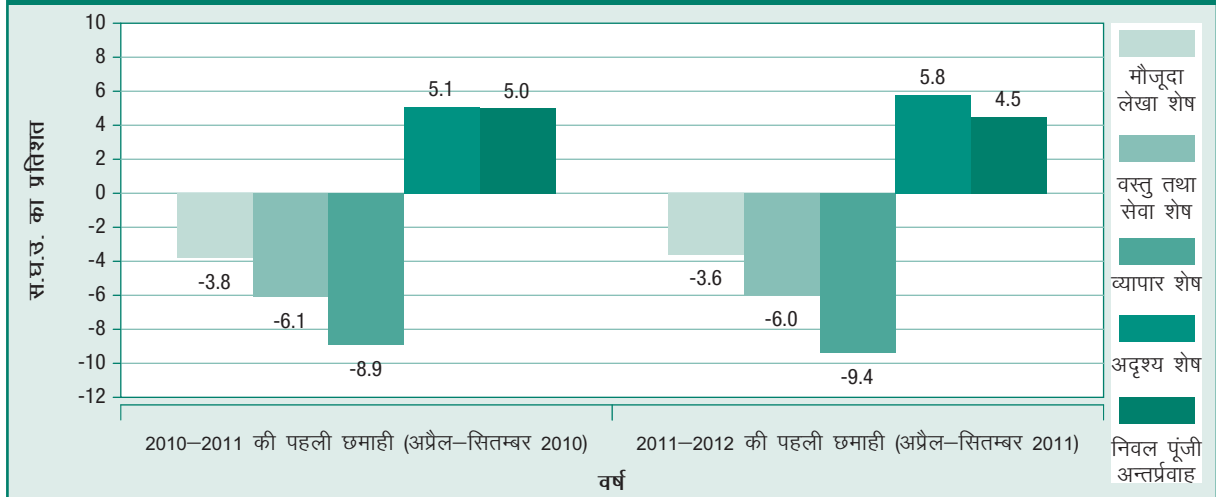
6.23 वाणिज्य मंत्रालय से उपलब्ध अप्रैल 2011-जनवरी 2012 के दौरान 242.8 बिलियन अमरीकी डालर के अद्यतन आंकड़ों के अनुसार, निर्यात ने 2010-11 की इसी अवधि के दौरान 196.6 बिलियन अमरीकी डालर निर्यात की तुलना में 23.5 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की। 391.5 बिलियन अमरीकी डालर पर आयातों ने अप्रैल 2011-जनवरी 2012 के दौरान 29.4 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की जबकि पिछले वर्ष की इसी अवधि के दौरान ये आंकड़े 302.6 बिलियन अमरीकी डालर थे। परिणामस्वरूप, व्यापार घाटा 40.3 प्रतिशत तक बढ़कर अप्रैल 2011-फरवरी 2012 के दौरान 148.7 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया जो अप्रैल 2010-जनवरी 2011 में 106 बिलियन अमरीकी डॉलर की तुलना में है।

**चित्र 6.1 2006-2007 से 2010-11 के दौरान सघउ के प्रतिशत के रूप में मौजूदा लेख शेष, वस्तु तथा सेवा शेष, व्यापार शेष, उदृश्य शेष और निवल पूंजी अन्तर्प्रवाह**



चित्र 6.2

2010-11 तथा 2011-12 की पहली छमाही दौरान सघउ के प्रतिशत के रूप में मौजूदा लेखा शेष, वस्तु तथा सेवा शेष, व्यापार शेष, उद्देश्य शेष और निवल पूंजी अन्तर्प्रवाह



### पूंजी-लेखा

6.24 पूंजी अन्तर्प्रवाह को लिखत (ऋण अथवा इक्विटी) तथा परिपक्वता (अल्पावधि अथवा दीर्घावधि) से वर्गीकृत किया जा सकता है। पूंजी लेखे के मुख्य संघटकों में विदेशी निवेश, ऋण तथा बैंकिंग पूंजी शामिल है। विदेशी निवेश में एफडीआई तथा पोर्टफोलियो निवेश शामिल है जो ऋण भिन्न देयताओं को प्रदर्शित करता है जबकि ऋण (विदेशी सहायता, ईसीबी तथा व्यापार घाटा) तथा एनआरआई जमा राशियों सहित बैंकिंग पूंजी ऋण देयताएं हैं। भारत में, पोर्टफोलियो निवेशों की तुलना में एफडीआई को तरजीह दी जाती है क्योंकि एफडीआई प्रवाह की प्रवृत्ति पोर्टफोलियो तथा अन्य पूंजी प्रवाहों के स्वरूपों की अपेक्षा अधिक स्थिर है, विदेशी मुद्रा ऋण भी तुलना में रुपया मूल्य वर्ग-ऋण को तरजीह दी जाती है और अल्पावधि की तुलना में मध्यावधि तथा दीर्घावधि ऋण को प्राथमिकता दी जाती है।

6.25 बाध्यकारी कारक अन्तरराष्ट्रीय पूंजी प्रवाह को व्याख्यायित करते हैं। बाध्यकारी कारक किसी अर्थव्यवस्था के लिए बाहरी हैं और अन्य बातों के साथ-साथ इसमें निम्न ब्याज दरों, पर्याप्त नकदी, मंद विकास अथवा विकसित अर्थव्यवस्थाओं में निवेश अवसरों का अभाव जैसे पैरामीटर शामिल हैं। उभरती-अर्थव्यवस्थाओं में आर्थिक सुधारों के फलस्वरूप ठोस आर्थिक निष्पादन तथा निवेश माहौल में सुधार जैसे बाध्यकारी कारक किसी अर्थव्यवस्था हेतु आन्तरिक हैं।

6.26 2010-11 में, पूंजी लेखे के अन्तर्गत 499.4 बिलियन अमरीकी डॉलर का सकल अन्तर्प्रवाह तथा 437.4 बिलियन अमरीकी डॉलर का बहिर्प्रवाह पिछले वर्ष में 345.8 बिलियन अमरीकी डॉलर के सकल अन्तर्प्रवाह तथा 294.1 बिलियन अमरीकी डॉलर के बहिर्प्रवाह की अपेक्षा अधिक था, निवल रूप में पूंजी अन्तर्प्रवाह 20.1 प्रतिशत तक बढ़कर

2010-11 में 62.0 बिलियन अमरीकी डॉलर (सघउ का 3.7 प्रतिशत) हो गया जो 2009-10 में 51.6 बिलियन अमरीकी डॉलर (सघउ का 3.8 प्रतिशत) की तुलना में है। ऐसा मुख्यतः व्यापार ऋण तथा ऋणों के कारण (ईसीबी तथा बैंकिंग पूंजी) था।

6.27 विदेशी निवेश का ऋण भिन्न प्रवाह में निवल आधार पर एफडीआई तथा पोर्टफोलियो निवेश (एडीआर/जीडीआर तथा एफआईआई) शामिल हैं जिसमें 21.4 प्रतिशत की कमी होकर यह 2009-10 में 50.4 बिलियन अमरीकी डॉलर से 2010-11 में 39.7 बिलियन अमरीकी डॉलर से 2010-11 में 39.7 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया। विदेशी निवेश में गिरावट को ऋणों के ऋण प्रवाह संघटक तथा बैंकिंग पूंजी से प्रतिसंतुलित किया गया जिसमें 130.3 प्रतिशत की वृद्धि होकर यह 2009-10 में 14.5 बिलियन अमरीकी डॉलर से 2010-11 में 33.4 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया।

6.28 आन्तरिक एफडीआई में घटती प्रवृत्ति दिखाई दी, जबकि बाह्य एफडीआई ने 2010-11 में 2009-10 की तुलना में बढ़ोतरी की प्रवृत्ति दर्शायी। आन्तरिक एफडीआई में 2009-10 में 33.1 बिलियन अमरीकी डॉलर से गिरावट होकर यह 2010-11 में 25.9 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया। वर्ष 2010-11 के दौरान क्षेत्रवार गिरावट मुख्यतया विनिर्माण, वित्तीय सेवाओं, बिजली और भवन-निर्माण के कारण रही। वर्ष 2010-11 में भारत को मॉरिशस के रास्ते किया गया देशवार निवेश विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (एफडीआई) का सबसे बड़ा संघटक रहा, इसके बाद सिंगापुर और नीदरलैंड का स्थान आता है। जावक एफडीआई वर्ष 2009-10 के 15.1 बिलियन अमरीकी डॉलर से बढ़कर 2010-11 में 16.5 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया। वर्ष 2010-11 के दौरान निम्न आवक एफडीआई और जावक एफडीआई में बढ़ोतरी के साथ भारत में निवल एफडीआई (आवक-जावक) महत्वपूर्ण रूप से कम रहा (एक वर्ष पहले 18.0 बिलियन अमरीकी डॉलर)।

6.29 वर्ष 2010-11 के दौरान निवल पोर्टफोलियो निवेश प्रवाह में 2009-10 के 32.4 बिलियन अमरीकी डॉलर के मुकाबले 30.3 बिलियन अमरीकी डॉलर की मामूली गिरावट देखी गई। विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) के अंतर्प्रवाहों में वर्ष 2009-10 के 29.0 बिलियन अमरीकी डॉलर से 2010-11 में मामूली रूप से बढ़ोतरी हुई।

6.30 पूंजीगत प्रवाहों की अन्य श्रेणियों नामतः ईसीबी के ऋण प्रवाह (बैंकिंग पूंजी और अल्पावधि ऋण में वर्ष 2010-11 में महत्वपूर्ण बढ़ोतरी देखी गई। निवल ईसीबी अन्तर्प्रवाह वर्ष 2009-10 में 2.0 बिलियन अमरीकी डॉलर से बढ़कर 2010-11 में ये 12.5 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गए। इसी प्रकार, अल्पावधि व्यापार ऋण वर्ष 2009-10 के 7.6 बिलियन अमरीकी डॉलर से बढ़कर 2010-11 में 11 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया, जो तीव्र घरेलू आर्थिक निष्पादन को दर्शाता है। इसके अतिरिक्त, वर्ष 2009-10 की 2.9 बिलियन अमरीकी डॉलर की विदेशी सहायता 2010-11 में बढ़कर 4.9 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गई।

6.31 पूंजी खाता अधिशेष वर्ष 2009-10 के 51.6 बिलियन अमरीकी डॉलर से 20.1 प्रतिशत बढ़कर 2010-11 में 62.0 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया। तथापि, सघउ के प्रतिशत के रूप में यह 2009-10 के 3.8 प्रतिशत से मामूली रूप में गिरकर 2010-11 में 3.7 प्रतिशत हो गया।

6.32 वर्ष 2010-11 में प्रारक्षितों (भुगतान संतुलन आधार पर) में निवल अनुवृद्धि 13.1 बिलियन अमरीकी डॉलर पर कमोबेश 2009-10 के (13.4 बिलियन अमरीकी डॉलर) के बराबर स्तर पर रहा।

6.33 राजकोषीय वर्ष 2011-12 में (पहली छमाही तक), पूंजी खाते के तहत 244.2 बिलियन अमरीकी डॉलर का अंतर्प्रवाह और 203.1 बिलियन डॉलर का बहिर्प्रवाह समग्र रूप से एक वर्ष पहले की इसी अवधि के दौरान के 207.5 बिलियन अमरीकी डॉलर के समग्र अंतर्प्रवाह और 168.5 बिलियन अमरीकी डॉलर के बहिर्प्रवाह से अधिक रहा। निवल दृष्टि से पूंजी अंतर्प्रवाह 2010-11 की पहली छमाही के 39.0 बिलियन अमरीकी डॉलर के मुकाबले 2011-12 की पहली छमाही में बढ़कर 12.3 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया, वहीं एफआईआई प्रवाह 2010-11 की पहली छमाही के 22.3 बिलियन अमरीकी डॉलर से बढ़ी गिरावट के साथ 2011-12 (पहली छमाही तक) में 0.9 बिलियन अमरीकी डॉलर हो जाने से इसी अवधि के दौरान निवल पोर्टफोलियो निवेश 23.8 बिलियन अमरीकी डॉलर से गिरकर 1.3 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया। ऐसा एफआईआई प्रवाहों में भारी गिरावट की वजह से हुआ जो 2010-11 की पहली छमाही के 22.3 बिलियन अमरीकी डॉलर से घटकर 2011-12 (पहली छमाही तक) 0.9 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गए। ईसीबी और बैंकिंग पूंजी सहित अन्य पूंजी प्रवाहों की काफी बढ़ोतरी हुई। निवल पूंजी प्रवाहों में सघउ के प्रतिशत में 2010-11 की पहली छमाही के 5.0 प्रतिशत से कमी आई और यह 2011-12 की पहली छमाही में 4.5 प्रतिशत हो गया।

6.34 प्रारक्षितों (भुगतान संतुलन के आधार पर) में 2011-12 की छमाही के दौरान निवल अनुवृद्धि विगत वर्ष की पहली छमाही

के 7 बिलियन अमरीकी डॉलर के मुकाबले गिरकर 5.7 बिलियन अमरीकी हो गयी जिसका मुख्य कारण सीएडी का विस्तार होना है।

6.35 पूंजी प्रवाहों के संबंध में उपलब्ध नवीनतम सूचना के अनुसार अप्रैल-दिसम्बर 2011 के दौरान 35.3 बिलियन अमरीकी डॉलर का एफआईआई अंतर्प्रवाह रहा (विगत वर्ष को इसी अवधि में यह 16.0 बिलियन अमरीकी डॉलर रहा)। पोर्टफोलियो अंतर्प्रवाह अप्रैल-दिसम्बर 2011 के दौरान एक वर्ष के 31.3 बिलियन अमरीकी डॉलर की बढ़ी गिरावट के साथ 3.3 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया जो मुख्यतया यूरो क्षेत्र संकट के कारण वैश्विक अर्थव्यवस्था में अनिश्चितता और जोखिम को दर्शाता है।

## विदेशी मुद्रा भंडार

6.36 भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति (एफसीए), सोना, विशेष आहरण अधिकार और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष में प्रारक्षित ट्रांशे स्थिति शामिल होती है। विदेशी मुद्रा भंडार का स्तर मुख्यतया विदेशी मुद्रा बाजार में भारतीय रिजर्व बैंक के हस्तक्षेप का परिणाम होता है जिससे कि अमरीकी डॉलर के विश्व की अन्य प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले घट-बढ़ के कारण विनिमय दर अस्थिरता और मूल्यन में परिवर्तनों को कम किया जा सके। भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा विदेशी मुद्रा बाजार में हस्तक्षेप के जरिए अतिरिक्त विदेशी मुद्रा प्रवाह, सहायता प्राप्तियां, ब्याज प्राप्तियां और अंतरराष्ट्रीय पुनर्निर्माण और विकास बैंक, एशियाई विकास बैंक, अंतरराष्ट्रीय विकास संघ आदि से निधीयन के फलस्वरूप विदेशी मुद्रा भंडार में संचयन हो जाता है।

6.37 विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियों को अमरीकी डॉलर, यूरो, पाउंड स्टर्लिंग, ऑस्ट्रेलियाई डॉलर, और जापानी येन जैसी प्रमुख मुद्राओं में रखा जाता है। अमरीकी डॉलर और यूरो दोनों मध्यवर्ती मुद्राएँ हैं, फिर भी भंडारों को केवल अमरीकी डॉलर में ही मूल्यांकित और व्यक्त किया जाता है, जो इस प्रयोजन हेतु लेन-देन की अंतरराष्ट्रीय इकाई है। अतः अन्य मुद्राओं जिनमें एफसीए रखे जाते हैं, के मुकाबले अमरीकी डॉलर की घट-बढ़ मुद्रा भंडार के स्तर पर अमरीकी डॉलर की तर्ज पर प्रभावित करती है। जब अमरीकी डॉलर का मूल्य प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मुद्राओं के मुकाबले बढ़ता है और इसके विपरीत होता है तो मुद्रा भंडार के स्तर में गिरावट होती है। सुरक्षा और नकदीकरण को दो उद्देश्य भारत में विदेशी मुद्रा भंडार के मार्गदर्शी सिद्धांत रहे हैं जिसमें इस फ्रेमवर्क के भीतर प्रतिलाभ इष्टतमीकरण सन्निहित कार्यनीति शामिल है।

## भारत का विदेशी मुद्रा भंडार

6.38 भारत का विदेशी मुद्रा भंडार मार्च, 1991 के अंत में 5.8 बिलियन अमरीकी डॉलर के निम्न स्तर से आरंभ होकर मार्च, 1995 के अंत तक क्रमिक रूप से बढ़कर 25.2 बिलियन, मार्च 2004 के अंत तक 113.0 बिलियन अमरीकी डॉलर, और मार्च 2007 के अंत तक 199.2 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया। विदेशी मुद्रा भंडार मार्च 2009 के अंत तक गिरकर 252.0 बिलियन

अमरीकी डॉलर होने से पहले मई 2004 के अंत तक 314.6 बिलियन अमरीकी डॉलर था। विदेशी मुद्रा भंडार में वर्ष 2008-09 के दौरान अन्य बातों के साथ साथ वैश्विक संकट होने और अन्य अंतरराष्ट्रीय मुद्राओं की तुलना में अमरीकी डॉलर के मजबूत होने से कमी आई। वर्ष 2009-10 के दौरान विदेशी मुद्रा भंडार का स्तर मार्च, 2010 के अंत में 279.1 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया जिसकी मुख्य वजह अधिकांश प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मुद्राओं के मुकाबले अमरीकी डॉलर में अवमूल्यन हुआ और मूल्य वृद्धि हुई। राजकोषीय वर्ष 2010-11 में, विदेशी मुद्रा भंडारों ने उर्ध्वमुखी प्रवृत्ति दिखाई और यह मार्च 2011 के अंत में 304.8 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया जो मार्च 2010 के अंत के 279.1 बिलियन अमरीकी डॉलर के स्तर से 25.7 बिलियन डॉलर अधिक है। भंडारों में हुई कुल वृद्धि में से 12.7 बिलियन अमरीकी डॉलर की वृद्धि प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमरीकी डॉलर में अवमूल्यन होने से हुए मूल्यन लाभ के कारण हुई और शेष 13.1 बिलियन अमरीकी डॉलर की वृद्धि भुगतान संतुलन के आधार पर हुई। वर्ष 2011-12 में मुद्रा भंडार मार्च 011 के अंत में 304.8 बिलियन अमरीकी डॉलर से 6.7 बिलियन डॉलर बढ़कर सितम्बर, 2011 के अंत में 311.5 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया। कुल वृद्धि में से 5.7 बिलियन अमरीकी डॉलर भुगतान संतुलन आधार पर हुआ

और शेष 1.0 बिलियन अमरीकी डॉलर मूल्यन प्रभाव के कारण हुआ (सारणी 6.3)। वर्ष 1950-51 से 2011-12 (दिसम्बर 2011 तक) तक की अवधि का विदेशी मुद्रा भंडार का संघटकवार ब्यौरा परिशिष्ट 6.1 (क) और 6.1 (ख) में रुपया और अमरीकी डॉलर में दिया गया है।

6.39 वर्तमान राजकोषीय वर्ष में माह-दर-माह आधार पर विदेशी मुद्रा भंडारों में दो तरह की प्रवृत्ति देखी गई। अगस्त 2011 के अंत में भंडारों में 320.0 बिलियन अमरीकी डॉलर का अब तक का सर्वोच्च स्तर देखा गया। तथापि, अक्टूबर 2011 के अंत में 316.2 बिलियन अमरीकी डॉलर तक बढ़ने के पहले सितम्बर 2011 के अंत में इसमें 311.5 बिलियन अमरीकी डॉलर तक की गिरावट आई थी। नवम्बर और दिसम्बर 2011 माह के दौरान भंडारों में पुनः अधोमुखी प्रवृत्ति देखी गई। दिसम्बर 2011 के अंत में इनमें 296.7 बिलियन अमरीकी डॉलर का स्तर रहा जो मार्च 2011 के अंत के 304.8 बिलियन अमरीकी डॉलर से 8.1 बिलियन अमरीकी डॉलर की गिरावट को दर्शाता है (चित्र 6.3)। भंडारों में गिरावट आंशिक रूप से अमरीकी डॉलर के मुकाबले रुपए के गिरने को रोकने के भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा किए गए हस्तक्षेप के कारण हुई। भंडारों का यह स्तर आयात का लगभग आठ माह की व्यवस्था प्रदान करता है।

**सारणी 6.3 : भुगतान संतुलन आधार पर विदेशी मुद्रा आरक्षित निधियों में परिवर्तन के स्रोत और मूल्यन प्रभाव (बिलियन अमरीकी डॉलर)**

क्र. सं.	मद	अप्रैल-सितम्बर			
		2009-10	2010-11 आ.सं.	2010-11 आ.सं.	2011-12 प्रा.
1	2	3	4	5	6
<b>I.</b>	<b>चालू खाता शेष</b>	<b>-38.2</b>	<b>-45.9</b>	<b>-29.6</b>	<b>-32.8</b>
<b>II.</b>	<b>पूँजी लेखा (निवल) (क से छ)</b>	<b>51.6</b>	<b>62.0</b>	<b>38.9</b>	<b>41.1</b>
	(क) विदेशी निवेश (i+ii)	50.4	39.7	30.8	13.6
	(i) एफडीआई	18.0	9.4	7.0	12.3
	(ii) पोर्टफोलियो निवेश	32.4	30.3	23.8	1.3
	जिसका				
	एफआईआई	29.0	29.4	22.3	0.9
	एडीआर/जीडीआर	3.3	2.0	1.6	0.5
	(ख) विदेशी वाणिज्यिक उधार	2.0	12.5	5.7	10.6
	(ग) बैंकिंग पूँजी	2.1	5.0	0.8	19.3
	जिसका : अप्रवासी जमाराशियां	2.9	3.2	2.2	3.9
	(घ) अल्पावधिक व्यापार क्रेडिट	7.6	11.0	6.9	5.9
	(ङ) विदेशी सहायता	2.9	4.9	3	0.7
	(च) पूँजी लेखा में अन्य मदें*	-13.3	-11.1	-9.2	-8.4
<b>III.</b>	<b>भूल-चूक</b>	<b>-0.01</b>	<b>-3.0</b>		
<b>IV.</b>	<b>समग्र शेष (I+II+III)</b>	<b>13.4</b>	<b>13.1</b>		
<b>V.</b>	<b>भुगतान संतुलन आधार पर आरक्षित परिवर्तन (वृद्धि/कमी+)</b>	<b>-13.4</b>	<b>-13.1</b>	<b>-7.0</b>	<b>-5.7</b>
<b>VI.</b>	<b>मूल्यन परिवर्तन</b>	<b>13.7</b>	<b>12.6</b>	<b>6.8</b>	<b>1.0</b>
<b>VII.</b>	<b>जोड़ आरक्षित परिवर्तन (V+VI)</b>				
	(आरक्षित निधियों में वृद्धि (+)/आरक्षित निधियों के कमी (-)	<b>27.1</b>	<b>25.7</b>	<b>13.8</b>	<b>6.7</b>

स्रोत: आरबीआई

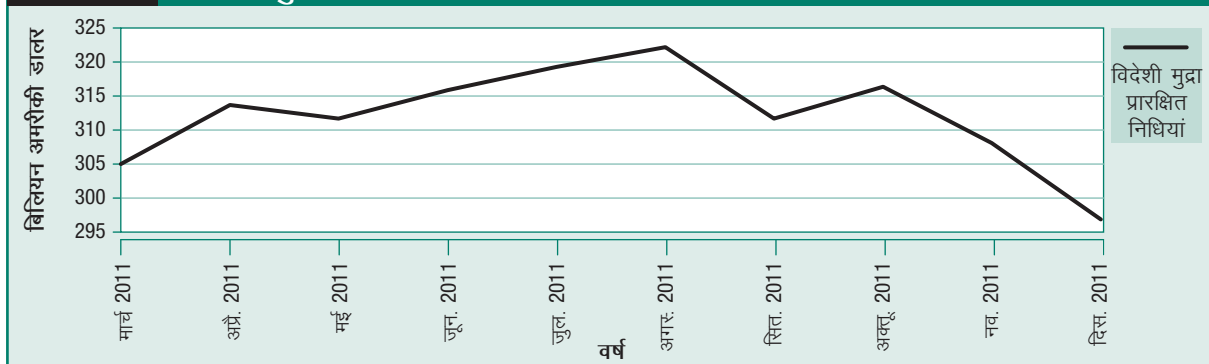
आ.सं. : आंशिक रूप से संशोधित

प्रा. : प्राथमिक

टिप्पणी: जोड़ पूर्णांकन की वजह से मिलान नहीं करेगा।



**चित्र 6.3** विदेशी मुद्रा प्रारक्षित निधियां



6.40 वर्ष 2006-07 से विदेशी मुद्रा भंडारों में परिवर्तनों का सार और भुगतान संतुलन आधार पर वृद्धि/कमी का व्यौरा तथा मूल्यन प्रभाव-सारणी 6.4 में प्रस्तुत किया गया है।

**विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियां (एफसीए)**

6.41 एफसीए भारत के विदेशी मुद्रा भंडारों के प्रमुख संघटक होती हैं। एफसीए मार्च 2011 के अंत के 274.6 बिलियन अमरीकी डॉलर से 11.3 बिलियन अमरीकी डॉलर गिरकर दिसम्बर 2011 के अंत में 263.3 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गई।

6.42 क्रय शक्ति, जोखिम कम से कम करने तथा प्रतिलाभों में अस्थिरता और नकदीकरण बनाए रखने की दृष्टि से भंडारों के दीर्घकालिक मूल्य को कायम रखने के सिद्धांतों की तर्ज पर भारतीय रिजर्व बैंक प्रमुख परिवर्तनीय मुद्रा लिखतों में एफसीए धारित करता है। इनमें अन्य देशों के केन्द्रीय बैंकों, अंतरराष्ट्रीय निपटान बैंक और उच्च श्रेणी के विदेशी वाणिज्यिक बैंकों तथा ऐसी

प्रतिभूतियों की जमाराशियां जो सार्वभौमिक और अधिराष्ट्र संस्थाओं के क्रय को निर्धारित करती हैं, जिसकी अवशिष्ट परिपक्वता 10 वर्ष से अधिक नहीं होती है, शामिल हैं जिससे कि पूंजी संरक्षण और नकदीकरण की एक तीव्र प्रवृत्ति उत्पन्न हो सके। भारतीय रिजर्व बैंक के बहु-मुद्रा बहुपरिसंपत्ति पोर्टफोलियो पर अवमूल्यन को घटाकर प्रतिलाभ की वार्षिकीकृत दर 2008-09 के 4.2 प्रतिशत से गिरकर 2009-10 में 2.1 प्रतिशत और 2010-11 में और गिरकर 1.7 प्रतिशत हो गई।

**अल्प देशों के विदेशी मुद्रा भंडार**

6.43 भारत विदेशी मुद्रा भंडारों के सबसे बड़े धारकों में एक रहा है। विदेशी मुद्रा भंडारों के देशवार व्यौरे से पता चला है कि दिसम्बर 2011 के अंत में भारत के पास विश्व में चीन, जापान, रूस, ब्राजील और स्वित्जरलैंड के पश्चात् छठा सबसे बड़ा विदेशी मुद्रा भंडार है (सारणी 6.5)।

**सारणी 6.4 : विदेशी मुद्रा प्रारक्षित निधियों में परिवर्तनों का सारांश ( बिलियन अमरीकी डॉलर )**

क्र. सं.	वर्ष	वित्त वर्ष के अंत में विदेशी मुद्रा प्रारक्षित निधियां ( मार्च अन्त )	प्रारक्षित निधियों में वृद्धि (+)/ कमी (-)	भुगतान संतुलन के आधार पर प्रारक्षित निधियों में वृद्धि (+)/ कमी (-)	मूल्यन प्रभाव के कारण प्रारक्षित निधियों में वृद्धि (+)/कमी (-)
1	2	3	4	5	6
1	2006-07	199.2	+ 47.6	+36.6 (76.9%)	+ 11.0 (23.1%)
2	2007-08	309.7	+ 110.5	+92.2 (83.4%)	+ 18.3 (16.6%)
3	2008-09	252.0	- 57.7	-20.1 (34.8%)	- 37.6 (65.2)
4	2009-10	279.1	+27.1	+13.4 (49.4%)	+13.7 (50.6%)
5	2010-11	304.8	+25.7	+13.1 (51.0%)	+12.6 (49.0%)
6	2011-12 (सितम्बर 2011 तक)	311.5	+6.7	+5.7 (85.1%)	+1.0 (14.9%)

स्रोत : आरबीआई

टिप्पणी : लघु कोष्ठक में दिए गए आंकड़े कुल परिवर्तन के प्रतिशत हिस्से को दर्शाते हैं।

**सारणी 6.5 : कुछ मुख्य देशों की विदेशी मुद्रा प्रारक्षित निधियां**

क्रम सं.	देश	विदेशी प्रारक्षित निधियां (दिसम्बर 2011 के अन्त तक) (बिलियन अमरीकी डॉलर)
1	2	3
1.	चीन	3181.1
2.	जापान	1326.1
3.	रूस	499.5
4.	भारत	352.0
5.	कोरिया	340.6
6.	ब्राजील	296.7
7.	चीन पीआर हांग कांग	285.5
8.	जर्मनी	262.3
9.	सिंगापुर	237.7
10.	फ्रांस	233.6

स्रोत : चीन को छोड़कर आईएमएफ

6.44 भारत सहित चुनिंदा देशीय समूहों और देशों के लिए माल एवं सेवाओं के आयात में विदेशी मुद्रा भंडार के अनुपात द्वारा यथामापित विदेशी मुद्रा भंडार की तुलनात्मक तस्वीर सारणी 6.6 में प्रस्तुत है। 'उभरती और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं' के माल एवं सेवाओं के आयात में भंडार का अनुपात 2006 के 75.5 प्रतिशत से बढ़कर 2010 में गिरकर 102.4 प्रतिशत होने से पहले 2009 में 109.1 प्रतिशत हो गया। देशीय समूहों में 'चीन और भारत सहित विकासशील एशिया' का अनुपात 2006 के 89.5 प्रतिशत से 2010 में गिरकर 131.2 प्रतिशत तक गिरने से पहले 2009 में बढ़कर 145 प्रतिशत हो गया था। 'मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका' के मामले में अनुपात वर्ष 2006 के 104.3 से स्थिर गति से 2010 में बढ़कर 118.9 हो गया।

## विनिमय दर

6.45 विनिमय दर नीति का संचालन सतर्क मॉनिटरिंग और लचीलेपन के साथ विनिमय दरों के प्रबंधन के व्यापक सिद्धांत द्वारा किसी अवधि में सुव्यवस्थित तरीके से विनिमय दर की घट-बढ़ के निर्धारण हेतु अन्तर्निहित मांग और आपूर्ति शर्तों में छूट देते हुए किया जाता है। इस प्रमुख उद्देश्य के अधीन विदेशी मुद्रा बाजार में भारतीय रिजर्व बैंक का हस्तक्षेप अत्यधिक अस्थिरता को कम करना, अस्थिर जमाखोरी कार्यकलापों के उद्भव को रोकना, भंडारों के पर्याप्त स्तर को बनाए रखना और एक सुव्यवस्थित विदेशी मुद्रा बाजार विकसित करने के उद्देश्यों द्वारा संचालित होता है।

6.46 वर्ष 2010-11 के दौरान अमरीकी डॉलर के मुकाबले रुपए की औसत मासिक विनिमय दर मार्च 2010 के 45.50 प्रति

अमरीकी डॉलर से 1.2 प्रतिशत बढ़कर मार्च 2011 में 44.97 प्रति अमरीकी डॉलर हो गई। इसी प्रकार, बिन्दु दर बिन्दु आधार पर रुपए की औसत विनिमय दर (भारतीय विदेशी मुद्रा डीलर संघ की औसत क्रय एवं विक्रय दर) 31 मार्च 2010 के 45.14 प्रति अमरीकी डॉलर से 1.1 प्रतिशत बढ़कर 31 मार्च 2011 को 44.65 प्रति अमरीकी डॉलर हो गई। यह मुख्यतः वर्ष 2010-11 में अमरीकी डॉलर के अंतरराष्ट्रीय बाजार में कमजोर हो जाने के कारण हुआ।

6.47 तथापि, वर्ष 2010-11 में पाउंड स्टर्लिंग, यूरो, और जापानी येन की तुलना में रुपए की मासिक औसत विनिमय दर में गिरावट हुई। पाउंड स्टर्लिंग की तुलना में रुपए की मासिक औसत विनिमय दर मार्च 2010 के 68.44 प्रति पाउंड से 5.9 प्रतिशत गिरकर मार्च 2011 में 72.71 हो गई। इसी प्रकार, यूरो और जापानी येन के मुकाबले रुपए की मासिक औसत विनिमय दर मार्च 2011 के 61.77 प्रति यूरो से 1.9 प्रतिशत गिरकर मार्च 2011 में 62.97 प्रति यूरो हो गई तथा मार्च 2010 के 50.18 प्रति 100 जापानी येन से 8.7 प्रतिशत गिरकर मार्च 2011 में 54.98 प्रति 100 जापानी येन हो गई।

6.48 राजकोषीय 2010-11 में जापानी येन को छोड़कर प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मुद्राओं के मुकाबले रुपए में वार्षिक औसत आधार पर अधिमूल्यन हुआ। वर्ष 2009-10 में रुपए की वार्षिक औसत विनिमय दर 47.44 प्रति अमरीकी डॉलर थी जिसमें 4.1 प्रतिशत का अधिमूल्यन हुआ और 2010-11 में यह 45.56 प्रति अमरीकी डॉलर हो गई। इसी प्रकार, वर्ष 2009-10 में रुपए की वार्षिक औसत विनिमय दर 75.76 प्रति पाउंड स्टर्लिंग और 67.03 प्रति यूरो थी जिसमें 2010-11 के दौरान 6.9 प्रतिशत का अधिमूल्यन हुआ और यह क्रमशः 70.87 प्रति पाउंड स्टर्लिंग और 60.21 प्रति यूरो हो गई। तथापि, रुपए की प्रति जापानी येन वार्षिक औसत विनिमय दर वर्ष 2009-10 के 51.11 प्रति 100 जापानी येन से 4.1 प्रतिशत गिरकर 2010-11 में 53.27 प्रति 100 जापानी येन हो गई।

6.49 वर्तमान राजकोषीय वर्ष में रुपए की विनिमय दर के दो भिन्न-भिन्न चरण हैं। रुपए में लगभग जुलाई 2011 तक अधिमूल्यन प्रवृत्ति के कारण दो तरह की घट-बढ़ दिखाई पड़ी जिसके बाद प्रवृत्ति उलट हो गई और सितम्बर 2011 से अनिश्चित वैश्विक अर्थव्यवस्था संबंधी घटकों के कारण इसमें तीव्रता से गिरावट होने लगी।

6.50 रुपए में मार्च 2011 के 44.97 प्रति अमरीकी डॉलर के स्तर से माह दर माह आधार पर 14.6 प्रतिशत का अवमूल्यन हुआ और यह दिसम्बर 2011 में 52.68 प्रति अमरीकी डॉलर हो गया। बिन्दु दर बिन्दु आधार पर इसमें 16.2 प्रतिशत का अवमूल्यन हुआ और 31 मार्च 2011 के 44.65 प्रति अमरीकी डॉलर के स्तर से गिरकर 30 दिसम्बर 2011 को यह 53.26 प्रति अमरीकी डॉलर हो गया। 27 जुलाई 2011 को रुपया 43.94 की ऊंचाई पर पहुंचा और

**सारणी 6.6 : विदेशी मुद्रा प्रारक्षित निधियों की अन्तरराष्ट्रीय तुलना ( बिलियन अमरीकी डॉलर ) तथा वस्तु और सेवाओं के आयातों के सम्बंध में प्रारक्षित निधियों का अनुपात**

क्रम सं.	देश/ देश समूह	2006	2007	2008	2009	2010	2011 (अनुमानित)	2012 (अनुमानित)
1	2	3	4	5	6	7	8	9
<b>I देश</b>								
1	रूस	296.2 (141.7)	467.6 (165.5)	412.7 (112.3)	417.8 (164.8)	454.5 (141.6)	527.4 (129.4)	582.5 (130.2)
2	चीन	1069.5 (125.4)	1531.3 (148.0)	1950.3 (158.2)	2417.9 (217.2)	2889.6 (190.0)	3479.5 (188.4)	4112.7 (195.4)
3	भारत	171.3 (75.5)	267.6 (95.1)	248.0 (71.3)	266.2 (73.8)	291.5 (66.4)	319.7 (62.1)	354.9 (60.3)
4	ब्राजील	85.2 (70.7)	179.5 (113.8)	192.9 (87.6)	237.4 (135.9)	287.5 (117.7)	366.1 (120.3)	412.9 (128.0)
5	मेक्सिको	76.3 (27.4)	87.1 (28.5)	95.1 (28.5)	99.6 (38.7)	120.3 (36.8)	140.3 (35.9)	150.3 (37.1)
<b>II समूह देश</b>								
1	विकासशील एशिया (चीन ओर भारत को छोड़कर)	248.7 (42.6)	330.0 (49.1)	335.8 (41.7)	393.9 (60.6)	488.0 (58.3)	581.3 (58.2)	658.2 (60.6)

स्रोत: वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक डाटा बेस, सितम्बर 2011

- टिप्पणी : 1. प्रारक्षित निधियाँ एसडीआर 35 प्रति औंस पर मूल्यित सोने की अधिकारिक धारिता पर आधारित है। इस परम्परा के परिणामस्वरूप वे देश जिनके पास पर्याप्त स्वर्ण धारिता है, वहाँ भंडारों को न्यून अनुमानन चिह्नित किया गया है।
2. लघु कोष्ठक में दिए गए आंकड़े प्रारक्षित निधियों और वस्तु तथा सेवा आयात के अनुपात को दर्शाते हैं।

15 दिसम्बर 2011 को 19 प्रतिशत का अवमूल्यन दर्शाते हुए 54.23 प्रति अमरीकी डॉलर के निम्न स्तर पर पहुँचा। इसी प्रकार, मार्च 2011 और दिसम्बर 2011 के बीच रुपए की मासिक औसत विनिमय दर पाउंड स्टर्लिंग के मुकाबले 11.5 प्रतिशत, यूरो के मुकाबले 9.1 प्रतिशत और जापानी येन के मुकाबले 18.7 प्रतिशत गिर गई।

6.51 रुपए में तीव्र गिरावट की व्याख्या घरेलू विदेशी मुद्रा बाजार में आपूर्ति मांग असंतुलन द्वारा की जा सकती है। इसकी वजह विदेशी संस्थागत निवेशकों के अंतर्प्रवाहों में कमी, अमरीकी राजकोष के सुरक्षित स्थान की स्थिति और वर्धित जोखिम निवारण के कारण अंतरराष्ट्रीय बाजार में अमरीकी डॉलर का सुदृढ़ीकरण तथा यूरो क्षेत्र संकट के कारण वर्धित जोखिम और उसके प्रभाव से उभरती बाजार व्यवस्थाओं (ईएमई) में वित्तीय बाजारों पर प्रभाव पड़ा। वैश्विक घटकों के अलावा अनेक घरेलू घटकों की वजह से रुपए की कमजोर होने वाली प्रवृत्ति में बढ़ोतरी हुई जिसमें सीएडी की बढ़ोतरी और उच्च मुद्रास्फीति भी शामिल है।

6.52 जैसाकि रुपए पर जुलाई 2011 से दबाव रहा है, भारतीय रिजर्व बैंक ने विदेशी मुद्रा की आपूर्ति बढ़ाने और रुपए की गिरावट

को रोकने हेतु विदेशी मुद्रा बाजार में सट्टेबाजी पर नियंत्रण करने के लिए प्रयास किए गए हैं। इन उपायों पर बॉक्स 6.1 में विस्तार से चर्चा की गई है।

6.53 इन उपायों और पूंजी अंतर्प्रवाहों में बढ़ोतरी के परिणामस्वरूप रुपए की विनिमय दर की गिरावट वाली प्रवृत्ति की स्थिति उलट हो गई। रुपए की मासिक औसत विनिमय दर दिसम्बर, 2011 के 52.68 प्रति अमरीकी डॉलर से 2.6 प्रतिशत बढ़कर जनवरी 2012 में 51.34 प्रति अमरीकी डॉलर हो गई। बिन्दु दर बिन्दु आधार पर रुपए की औसत विनिमय दर 15 दिसम्बर 2011 को 54.23 प्रति अमरीकी डॉलर के निम्नतम मूल्य से 31 जनवरी, 2012 को 49.67 प्रति अमरीकी डॉलर पर आ गई।

6.54 वर्ष 2011-12 के दौरान प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय मुद्राओं के मुकाबले रुपए की माह-वार विनिमय दर और विदेशी मुद्रा बाजार में भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा विदेशी मुद्रा का विक्रय/क्रय सारणी 6.7 में दर्शाया गया है।

6.55 2011-12 के दौरान रुपया प्रति अमरीकी डॉलर और इसके अधिमूल्यन/अवमूल्य की मासिक विनिमय दर चित्र 6.4 में दर्शाई गयी है।

### बॉक्स 6.1 : रुपए की विनिमय दर में गिरावट को रोकने हेतु हाल के नीति संबंधी पहल

रुपए के मूल्य को स्थिर करने हेतु पूंजी प्रवाहों को प्रोत्साहित करने और विदेशी मुद्रा बाजार में सट्टेबाजी को रोकने के लिए हाल में कई कदम उठाए गए हैं। प्रमुख विवरण इस प्रकार हैं:

#### I. विदेशी मुद्रा की आपूर्ति बढ़ाने के उपाय

##### कारोबार ऋण

- कारोबार ऋण के लिए सम्पूर्ण लागत उच्चतम सीमा को 6 माह लिबोर + 200 आधार बिन्दुओं (बीपीएस) से बढ़ाकर 6 माह लिबोर + 350 बीपीएस कर दिया गया है।

##### ईसीबी

- ईसीबी-स्वचालित अनुमोदन मार्ग के तहत पात्र कॉरपोरेटों के लिए मौजूदा ईसीबी सीमा को 500 मिलियन अमरीकी डॉलर से बढ़ाकर 750 मिलियन अमरीकी डॉलर कर दिया गया है। सेवा क्षेत्र में उधारकर्ता के लिए 100 मिलियन अमरीकी डॉलर की सीमा को बढ़ाकर 200 मिलियन अमरीकी डॉलर कर दिया गया है।
- ईसीबी के लिए सम्पूर्ण लागत उच्चतम सीमा में संशोधन, जो इस प्रकार है:

औसत परिपक्वता अवधि	6 माह लिबोर पर सम्पूर्ण लागत*	
	मौजूदा	संशोधित
3 वर्ष और 5 वर्ष तक	300 बीपीएस	350 बीपीएस
5 वर्ष से अधिक	500 बीपीएस	500 बीपीएस

\* सम्बद्ध करंसी ऋण अथवा प्रयोज्य बेंचमार्क के लिए

- सम्पूर्ण उच्चतम सीमा में परिवर्तन 23 नवम्बर 2011 तत्काल लागू है तथा उसके बाद 31 मार्च 2012 समीक्षा के अधीन है।
- भारत में रुपए के व्यय हेतु विदेश में जुटाए गए ईसीबी की आय को तत्काल लाया जाना चाहिए। दूसरे शब्दों में विदेशी मुद्रा व्यय के लिए ही होने वाली ईसीबी आय को लम्बित आयोग के लिए विदेश में रखा जा सकता है। तथापि, रुपया संबंधी निधियों को पूंजी बाजार अथवा स्थावर संपदा में निवेश के लिए अथवा अंतर-कॉरपोरेट ऋण प्रदान करने हेतु उपयोग के लिए अनुमति नहीं दी जाएगी।

##### एफआईआई निवेश

- सरकारी प्रतिभूतियों और कॉरपोरेट बॉन्डों में निवेश के लिए एफआईआई सीमा को प्रत्येक के लिए 5 बिलियन अमरीकी डॉलर बढ़ाकर क्रमशः 15 बिलियन अमरीकी डॉलर और 20 बिलियन अमरीकी डॉलर किया गया है। तथापि, दीर्घावधि इनफ्रास्ट्रक्चर कॉरपोरेट बॉन्ड की 25 बिलियन अमरीकी डॉलर की निवेश सीमा अपरिवर्तित रही है। इसके साथ कॉरपोरेट बॉण्डों और सरकारी प्रतिभूतियों में एफआईआई निवेश हेतु समग्र सीमा अब 60 बिलियन अमरीकी डॉलर है।

##### एनआरआई जमाराशियां

- 23 नवम्बर 2011 को कारोबार की समाप्ति एक से तीन वर्ष की परिपक्वता वाली नई अनिवासी ने ( बाह्य ) रुपया ( एनआरआई ) सावधि जमा राशियों पर ब्याज दरों को बढ़ाकर लिबोर/स्वॉप +275 आधार बिन्दु कर दिया गया। ये ब्याज दरें तीन वर्ष से अधिक परिपक्वता अवधि वाली जमाराशियों और वर्तमान परिपक्वता अवधि के परचात् नवीकरण की गई जमाराशियों पर लागू होंगी। 23 नवम्बर, 2011 की स्थिति के अनुसार भारत में कारोबार की समाप्ति से प्रभावी संविदा की गयी सभी परिपक्वताओं वाली विदेशी मुद्रा/अनिवासी बैंक जमाराशि ( एफसीएनआर (बी) जमाराशियों पर ब्याज दर संबंधित मुद्रा/तदनुरूपी परिपक्वताओं के लिए लिबोर/स्वा दरों +125 आधार बिन्दुओं की उच्चतम दर के भीतर होगी।

#### II भारतीय रिजर्व बैंक की प्रेस विज्ञप्ति दि० 15 दिसम्बर 2011 के अनुसार प्रमुख प्रशासनिक उपाय

- स्थानिकों द्वारा अन्तर्निहित प्रकटन के प्रकार तथा अवधि का ध्यान रखे बिना की गई वायदा संविदाओं जिनमें रुपए को एक मुद्रा के रूप में शामिल किया गया है, एक बार रद्द कर दिए जाने पर पुनः संविदा नहीं की जा सकती।
  - ग्राहकों की ओर से अधिकृत डीलरों द्वारा सभी नकद/टॉम/हाज़िर सौदे केवल वास्तविक विप्रेषण सुपुर्दगी के लिए किए जाएंगे और इन्हें रद्द/नकदी निपटान नहीं किया जा सकता।
  - एफआईआई द्वारा की गई वायदा संविदाओं को एक बार रद्द कर दिए जाने पर उनकी पुनः संविदा नहीं की जा सकती। तथापि, उन्हें परिपक्वता होने पर अथवा इससे पहले पुनर्निर्धारण किये जा सकता है।
  - अधिकृत डीलरों के निदेशक बोर्ड को निवल एक दिवसीय मुक्त विनिमय स्थिति और कुल अंतराल सीमाएं जिन्हें भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा अनुमोदित किया जाता है, के साथ विभिन्न राजकोषीय कार्यों के लिए उपयुक्त सीमाएं निर्धारित करने की अनुमति थी।
- (क) अधिकृत डीलरों की निवल एक दिवसीय मुक्त स्थिति सीमा (एनओओपीएल) को एक समान रूप से कम किया जाएगा और अलग-अलग बैंक की संशोधित सीमाओं के संबंध में अधिकृत डीलरों को पृथक रूप से सलाह दी जा रही है।
- (ख) अधिकृत डीलरों की एक दिवसीय मुक्त स्थिति/दैनिक सीमा भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा अनुमोदित एनओओपीएल से अधिक नहीं होनी चाहिए।

स्रोत: भारतीय रिजर्व बैंक

**सारणी 6.7 : वर्ष 2010-11 और 2011-12 के दौरान प्रति विदेशी मुद्रा रुपए की विनिमय दरें और विनिमय बाजार में भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा अमरीकी डॉलर की बिक्री/खरीद**

माह	औसत विनिमय दरें ( रुपया प्रति विदेशी मुद्रा )*				भारतीय रिजर्व बैंक की निवल बिक्री (-)/खरीद (+) ( अमरीकी डॉलर मिलियन में)
	अमरीकी डॉलर	पाउंड स्टर्लिंग	यूरो	जापानी येन**	
1	2	3	4	5	6
<b>2010-11</b> (वार्षिक औसत)	45.56 (4.1)	70.87 (6.9)	60.21 (11.3)	53.27 (-4.1)	1690
मार्च-2011	44.97 (1.0)	72.71 (0.8)	62.97 (-1.4)	54.98 (0.1)	
<b>2011-12</b> (माहवार औसत)					
अप्रैल-2011	44.37 (1.4)	72.72 (-0.02)	64.25 (-2.0)	53.31 (3.1)	-
मई-2011	44.90 (-1.2)	73.41 (-0.9)	64.48 (-0.4)	55.32 (-3.6)	-
जून-2011	44.83 (0.2)	72.79 (0.9)	64.52 (-0.1)	55.65 (-0.6)	-
जुलाई-2011	44.42 (0.9)	71.65 (1.6)	63.46 (1.7)	55.91 (-0.5)	-
अगस्त-2011	45.25 (-1.8)	74.11 (-3.3)	64.94 (-2.3)	58.68 (-4.7)	-
सितम्बर-2011	47.63 (-5.0)	75.12 (-1.3)	65.47 (-0.8)	62.03 (-5.4)	(-) 845.0
अक्टूबर-2011	49.26 (-3.3)	77.49 (-3.1)	67.45 (-2.9)	64.11 (-3.2)	(-) 943.0
नवम्बर-2011	50.86 (- 3.1)	80.25 (- 3.4)	68.91 (- 2.1)	65.60 (- 2.3)	(-) 2,918.0
दिसम्बर-2011	52.68 (- 3.5)	82.13 (- 2.3)	69.29 (- 0.6)	67.63 (- 3.0)	(-)7809.0

स्रोत : भारतीय रिजर्व बैंक

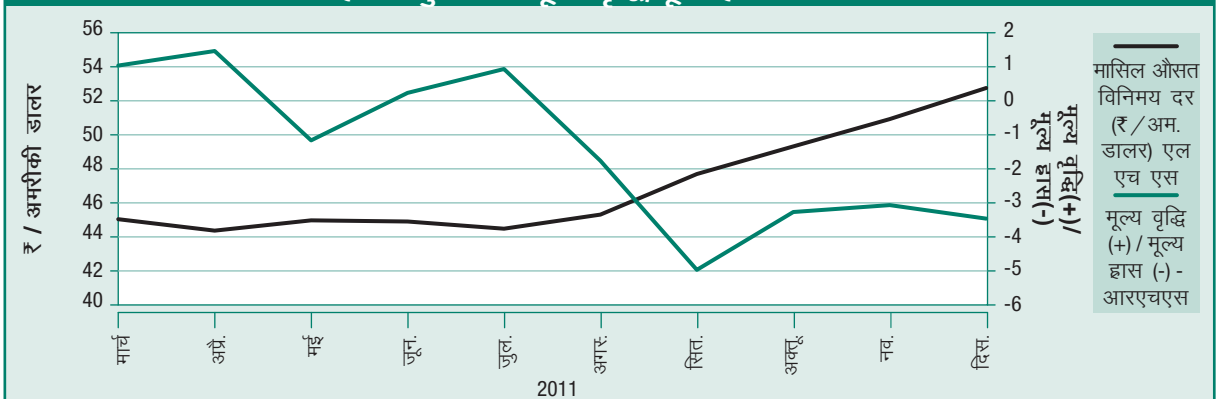
टिप्पणी : \*एफईडीएआई निर्देशात्मक दर; \*\*प्रति 100 येन। लघु कोष्ठकों में दिए गए आंकड़े विगत माह/वर्ष की तुलना में अधिमूल्यन (+) और हास (-) दर्शाते हैं। कुछ प्रतिशत आंकड़े पूर्णांकन की वजह से मिलान नहीं करेंगे।

**अन्य उभरती अर्थव्यवस्थाओं की विनिमय दर**

6.56 2011-12 के दौरान मुद्रा अवमूल्यन केवल भारत के संदर्भ में विशिष्ट नहीं था। अन्य उभरती अर्थव्यवस्थाओं जैसे ब्राजील रीआल, मेक्सिकन पेसो, रसियन रूबल, दक्षिण कोरिया का वॉन,

दक्षिण अफ्रीका रैंड मुद्राओं में, यूरो जोन में सम्प्रभु ऋण संकट के परिणामस्वरूप सुरक्षित संपदा के रूप में डॉलर की वर्धित मांग को दर्शाते हुए इसने अमरीकी डॉलर की तुलना में गिरावट दर्शाई। जुलाई और नवम्बर, 2011 के बीच ब्राजील के रीआल ने 11.9

**चित्र 6.4 मार्च 2011 से दिसम्बर 2011 के दौरान मासिक औसत विनिमय दर (₹/अमरीकी डॉलर) तथा पिछले माह की तुलना में मूल्य वृद्धि/मूल्य हास**



प्रतिशत, रशियन रूबल ने 9.3 प्रतिशत, दक्षिणी कोरियाई वॉन ने 6.2 प्रतिशत और दक्षिणी अफ्रीकी रैंड ने 17.63 प्रतिशत की गिरावट दर्शाई।

6.57 1991-92 से वर्षवार और 2011-12 के दौरान माहवार चुनिंदा अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राओं की तुलना में रुपए की विनिमय दर परिशिष्ट 6.5 में दी गयी है।

#### नॉमिनल प्रभावी विनिमय दर (नीर) और वास्तविक प्रभावी विनिमय दर (रीर)

नीर और रीर सूचकांक कुछ समयावधि के बाद देश के विदेशी प्रतिस्पर्धा के संकेतक हैं। नीर, विदेशी मुद्राओं के सन्दर्भ में देशी मुद्रा की द्विपक्षीय नॉमिनल मुद्रा विनिमय दरों का भारत औसत है, जबकि रीर को, देशी और विदेशी मूल्यों विभेदकों के समायोजन वाले नॉमिनल विनिमय दरों के भारत औसत के रूप में परिभाषित किया जाता है। रीर भारत और इसके मुख्य व्यापारिक भागीदारों के बीच आपसी मुद्रा विनिमय दर और स्फीति विभेदकों में होने वाली गतिविधि को ग्रहण है। आरबीआई छः मुद्रा (अमरीकी डॉलर, यूरोजोन का यूरो, पाउन्ड स्टर्लिंग, जापानी येन, चीनी रेनमिन्बी और

हांगकांग डॉलर) और 36 मुद्राओं का नीर और रीर सूचकांक बना रही है।

6.58 छः मुद्रा व्यापार आधारित नीर (आधार: 2004-05=100) का मार्च 2010 और मार्च 2011 के बीच 2.1 प्रतिशत तथा मार्च 2011 और दिसम्बर 2011 बीच 13.5 प्रतिशत का अवमूल्यन हुआ। इसकी तुलना में, रुपए की मासिक औसत विनिमय दर मार्च 2010 और मार्च 2011 के बीच 1.2 प्रतिशत का अधिमूल्यन हुआ जबकि चालू राजकोषीय में इसका अवमूल्यन मार्च 2011 में 44.97 प्रति अमरीकी डॉलर से दिसम्बर 2011 में 52.68 प्रति अमरीकी डॉलर तक होकर 14.6 प्रतिशत हुआ। (सारणी 6.8 और परिशिष्ट 6.6)

6.59 रुपए का छः मुद्रा व्यापार आधारित रीर (आधार 2004-05=100) का मार्च 2010 और मार्च 2011 के बीच 4.1 प्रतिशत का अधिमूल्यन हुआ। 2011-12 (दिसम्बर 2011 तक) के दौरान छः मुद्रा सूचकांकों ने मार्च 2011 की तुलना में जो 10.8 प्रतिशत का अवमूल्यन दर्शाया, वह नॉमिनल सन्दर्भ में रुपए का अवमूल्यन दर्शाता है और यह अगस्त-दिसम्बर 2011 के अवधि में मुख्यतया हुआ था।

सारणी 6.8 : भारतीय रुपए के रीर तथा नीर सूचकांक (छह-करेंसी व्यापार-आधारित भारांश)  
आधार 2004-05 (अप्रैल-मार्च)=100

माह/वर्ष	नीर	नीर में विगत माह की तुलना में अधिमूल्यन (+) /हास (-)	रीर	रीर में विगत माह की तुलना में अधिमूल्यन (+) /हास (-)
1	2	3	4	5
मार्च 2010	92.19		111.43	
मार्च 2011	90.29	-2.1	115.97	4.1
2011-12				
अप्रैल 2011	90.43	0.2	117.43	1.3
मई 2011	89.33	-1.2	116.46	-0.8
जून 2011(अ)	89.32	0	116.13	-0.3
जुलाई 2011 (अ)	90.34	1.1	117.72	1.4
अगस्त 2011 (अ)	88.13	-2.4	115.68	-1.7
सितम्बर 2011 (अ)	85.08	-3.5	112.46	-2.8
अक्तूबर 2011 (अ)	82.35	-3.2	108.92	-3.1
नवम्बर 2011 (अ)	80.00	-2.9	105.92	-2.8
दिसम्बर 2011 (अ)	78.06	-2.4	103.46	-2.3

स्रोत : आरबीआई अ: अनन्तिम

सारणी 6.9 : अंतरराष्ट्रीय मुद्राओं के मुकाबले अमरीकी डालर की विनिमय दर				
माह/वर्ष	जीबीपी/अमरीकी डॉलर	यूरो/अमरीकी डॉलर	अमरीकी डॉलर/ जापानी ये. आस्ट्रेलियाई डॉलर	अमरीकी डॉलर/ आस्ट्रेलियाई डॉलर
1	2	3	4	5
मार्च 2010	1.5082	1.3543	90.885	0.9095
मार्च 2011	1.60315	1.4162	83.21	1.0336
अमरीकी डॉलर अधिमूल्यन (+) / अवमूल्यन (-) (मार्च 2010 अंत- मार्च 2011 अंत)	-5.9	-4.4	-8.4	-12.0
2011-12				
अप्रैल 2011	1.6707	1.4806	81.11	1.0964
मई 2011	1.6445	1.4392	81.545	1.0672
जून 2011	1.6047	1.4503	80.535	1.0721
जुलाई 2011	1.6418	1.4384	76.895	1.0990
अगस्त 2011	1.6246	1.4374	76.61	1.0692
सितम्बर 2011	1.5589	1.3391	77.14	0.9668
अक्टूबर 2011	1.6087	1.3858	78.185	1.0536
नवम्बर 2011	1.5712	1.3448	77.55	1.0275
दिसम्बर 2011	1.5537	1.2942	76.95	1.0221
अमरीकी डॉलर \$ अधिमूल्यन (+) / ह्रास (-) (मार्च 2011 अंत-दिसम्बर 2011 अंत)	3.2	9.4	-7.5	1.1

स्रोत : आरबीआई

### अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में अमरीकी डॉलर विनिमय दर

6.60 जहां तक अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राओं का संबंध है, 2010-11 के दौरान अमरीकी डॉलर का अवमूल्यन पाउन्ड स्टर्लिंग की तुलना में 5.9 प्रतिशत, यूरो की तुलना में 4.4 प्रतिशत, जापानी येन की तुलना में 8.4 प्रतिशत और ऑस्ट्रेलियन डॉलर की तुलना में 12.0 प्रतिशत हुआ। मौजूदा राजकोष वर्ष में (दिसम्बर 2011 के अंत तक) अमरीकी डॉलर का अधिमूल्यन पाउन्ड स्टर्लिंग की तुलना में 3.2 प्रतिशत, यूरो की तुलना में 9.4 प्रतिशत, ऑस्ट्रेलियन डॉलर की तुलना में 1.1 प्रतिशत हुआ। तथापि, इसका अवमूल्यन जापानी येन की तुलना में 7.5 प्रतिशत हुआ (सारणी 6.9)

### विदेशी ऋण

6.61 मार्च 2010 के अंत में 261.0 बिलियन अमरीकी डॉलर के स्तर की तुलना में 45.4 बिलियन अमरीकी डॉलर (17.4 प्रतिशत) की वृद्धि दर्ज करते हुए 306.4 बिलियन अमरीकी डॉलर (13,68,477 करोड़) था। घटक-वार दीर्घावधि ऋण मार्च 2010 के अंत में 208.7 बिलियन अमरीकी डॉलर से 15.7 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज कर मार्च 2011 के अंत में 241.4 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया। मूल परिपक्वता पर आधारित अल्पावधिक ऋण मार्च 2010 के 52.3 बिलियन अमरीकी डॉलर से 24.2 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाते

हुए 65 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया। परिशिष्ट 8.4(क) और 8.4(ख) मार्च 1991 से सितम्बर 2011 तक की अवधि के बकाया भारतीय विदेशी ऋण संबंधी भिन्न-भिन्न प्रकार के आंकड़े क्रमशः भारतीय रुपए और अमरीकी डॉलर में दर्शाते हैं।

6.62 भारत का विदेशी ऋण स्टॉक मार्च 2011 अंत के अनुमान में 306.4 बिलियन अमरीकी डॉलर की तुलना में सितम्बर 2011 के अंत में 20.2 बिलियन अमरीकी डॉलर (6.6 प्रतिशत) बढ़कर 326.6 अमरीकी डॉलर हो गया। इस वृद्धि का मुख्य कारण अधिक वाणिज्यिक उधार और अल्पावधिक ऋण है जो दोनों मिलाकर विदेशी ऋण की कुल वृद्धि का 80 प्रतिशत से अधिक है। अल्पावधिक व्यापार ऋणों में वृद्धि उचित और सशक्त घरेलू आर्थिक कार्यकलाप के साथ आयातों के अनुरूप है।

6.63 भारतीय विदेशी ऋण परिपक्वता की रूपरेखा दीर्घावधि उधार की प्रमुखता की ओर संकेत करती है। सितम्बर, 2011 के अंत में दीर्घावधि विदेशी ऋण 255.1 बिलियन अमरीकी डॉलर है जो कुल विदेशी ऋण का 78.1 प्रतिशत है। सितम्बर 2011 के अंत में दीर्घावधि ऋण में मार्च 2011 अंत के स्तर की तुलना में 13.6 बिलियन (5.6 प्रतिशत) अमरीकी डॉलर की वृद्धि हुई, जबकि अल्पावधि ऋण (मूल परिपक्वता) ने 6.5 बिलियन अमरीकी डॉलर (10.1 प्रतिशत) की वृद्धि दर्शाई। (सारणी 6.10)

सारणी 6.10 : भारत का विदेशी ऋण स्टॉक						
माच अंत में	मिलियन अमरीकी डालर			करोड़ ₹		
	दीर्घावधि	अल्पावधि	जोड़	दीर्घावधि	अल्पावधि	जोड़
1	2	3	4	5	6	7
2005	116279	17723	134002	508777	77528	586305
2006	119575	19539	139114	533367	87155	620522
2007	144230	28130	172360	628771	122631	751402
2008	178669	45738	224407	714409	182881	897290
2009	181185	43313	224498	921469	220656	1142125
2010	208685	52329	261014	942806	236188	1178994
2011 आं.सं.	241448	64990	306438	1078330	290147	1368477
2011 (जून अंत) आं.सं.	249010	68474	317484	1116205	306248	1422453
2011 (सित. अंत) त्व. अ.	255071	71530	326601	1247863	349889	1597752

स्रोत: वित्त मंत्रालय और भा.रि.बैं.

टिप्पणी: आं.सं.: आंशिक संशोधन

त्व.अ. : त्वरित अनुमान

6.64 दीर्घावधि ऋण के तहत संघटक जैसे वाणिज्यिक उधार, एनआरआई जमा राशियां और बहुपक्षीय उधार मिलाकर सितम्बर 2011 के अंत में कुल विदेशी ऋण का 61.3 प्रतिशत है, जबकि अन्य दीर्घावधि ऋण संघटक (बहुदेशीय उधार, विदेशी ऋण, आईएमएफ और रुपया ऋण) कुल विदेशी ऋण का 16.8 प्रतिशत है। इस प्रकार दीर्घावधि ऋण सभी संघटकों को ध्यान में रखते हुए 78.1 प्रतिशत है, जबकि शेष (21.9 प्रतिशत) सितम्बर 2011 के अंत में (सारणी 6.11) अल्पावधिक ऋण था।

6.65 भारत का कुल विदेशी ऋण संघटन दर्शाता है कि अमरीकी डॉलर मूल्यवर्ग ऋण हिस्सेदारी में सितम्बर 2011 के अंत में 55.8 प्रतिशत के विदेशी ऋण स्टॉक में अधिकतम था, उसके बाद भारतीय रुपया (18.2 प्रतिशत), जापानी येन (12.1 प्रतिशत) एसडीआर (9.1 प्रतिशत) और यूरो (3.5 प्रतिशत) था। सम्प्रभु ऋण मुद्रा संघटन, एसडीआर-मूल्यवर्ग ऋण (37.3 प्रतिशत) के पूर्व आधिपत्य की ओर संकेत करता है जो अन्तर्राष्ट्रीय विकास संघ (आईडीए) से उधार से संबंधित

सारणी 6.11 : विदेशी ऋण संघटन		( कुल विदेशी ऋण का प्रतिशत )			
क्र.सं.	संघटक	मार्च 2010 ( आं.सं. )	मार्च 2011 ( आं.सं. )	जून 2011 ( आं.सं. )	सितम्बर 2011 ( त्व.अ. )
1	2	3	4	5	6
1	बहुपक्षीय	16.4	15.8	15.6	15.0
2	द्विपक्षीय	8.7	8.4	8.3	8.4
3	आईएमएफ	2.3	2.1	2.0	2.0
4	निर्यात क्रेडिट	6.5	6.1	5.9	6.0
5	वाणिज्यिक उधार	27.1	29.0	29.5	30.3
6	एनआरआई जमाराशियां	18.3	16.9	16.6	16.0
7	रुपया ऋण	0.6	0.5	0.5	0.4
8	दीर्घावधि ऋण (1 से 7)	79.9	78.8	78.4	78.1
9	अल्पावधि ऋण	20.1	21.2	21.6	21.9
10	जोड़ विदेशी ऋण (8+9)	100.0	100.0	100.0	100.0

स्रोत: वित्त मंत्रालय और भा.रि.बैं.

आं.सं. : आंशिक संशोधन;

त्व.अ. : त्वरित अनुमान



सारणी 6.12 : भारत के विदेशी ऋण और सम्प्रभु विदेशी ऋण का मुद्रा संघटक									
क्र. सं.	मुद्रा	कुल विदेशी ऋण				सम्प्रभु विदेशी ऋण			
		मार्च 2010	मार्च 2011 आ.सं.	जून 2011 आ.सं.	सित. 2011 त्व.अ.	मार्च 2010 आ.सं.	मार्च 2011 आ.सं.	जून 2011 आ.सं.	सित. 2011 त्व.अ.
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	अमरीकी डालर	53.2	53.6	54.3	55.8	26.5	26.8	26.7	26.5
2	एसडीआर	10.7	9.7	9.5	9.1	41.7	38.1	38.2	37.3
3	भारतीय रुपया	18.7	19.5	19.1	18.2	8.9	12.4	12.2	12.5
4	जापानी येन	11.5	11.4	11.1	12.1	18.6	18.8	18.9	19.9
5	यूरो	3.6	3.7	3.7	3.5	4.3	3.9	3.9	3.8
6	पाउंड स्टर्लिंग	1.8	1.7	1.7	0.8	0.0	0.0	0.0	0.0
7	अन्य	0.5	0.5	0.6	0.5	0.0	0.0	0.0	0.0
कुल		100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0

स्रोत: वित्त मंत्रालय और भार.रि.बैं.

टिप्पणी: आं. सं : आंशिक संशोधित

त्व.अ.त्वरित अनुमान

है अर्थात् बहुदेशीय एजेन्सियों के तहत विश्व बैंक का उदार शर्तों पर दिए जाने वाला ऋण विन्डो और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा एसडीआर आवंटन/अमरीकी डॉलर मूल्यवर्ग ऋण का हिस्सा 26.5 प्रतिशत और बाद में जापानी-येन मूल्यवर्ग (19.9 प्रतिशत)(सारणी 6.12) था।

6.66 भारतीय विदेशी ऋण के तहत सम्प्रभु विदेशी ऋण 79.3 बिलियन अमरीकी डॉलर था जबकि गैर सरकारी ऋण सितम्बर 2011 के अंत में 247.3 बिलियन अमरीकी डॉलर था। कुल विदेशी ऋण में सरकारी विदेशी ऋण का हिस्सा मार्च 2011 के अंत के 25.5 प्रतिशत से घटकर सितम्बर 2011 के अंत में 24.3 प्रतिशत हो गया। सरकारी ऋण और सघउ अनुपात ने विगत तीन वर्षों की तुलना में गिरावट दर्शाई और यह 4.6 से 5.1 प्रतिशत के बीच रहा।

6.67 पिछले वर्षों में, भारतीय विदेशी ऋण स्टॉक ने संघटन के सन्दर्भ में संरचनात्मक परिवर्तन दर्शाया है। कुल ऋण में रियायती का हिस्सा, सरकारी ऋण ग्राहियों और सरकारी ऋण की घटती हिस्सेदारी व गैर-रियायती निजी ऋण में प्रवाह के कारण घटा। कुल ऋण में रियायती का अनुपात 1991-2000 की अवधि के दौरान 42.9 प्रतिशत (औसत) से 2001-10 में घटकर 28.1 प्रतिशत और सितम्बर 2011 के अंत में और घटकर 14.7 प्रतिशत रह गया। गैर-सरकारी, ऋण का बढ़ता हिस्सा इस बात का साक्ष्य है कि ऐसा ऋण 1990 के दशक में कुल ऋण का 45.3 प्रतिशत की तुलना में 2000 के दशक के दौरान 65.6 प्रतिशत था। गैर सरकारी ऋण विगत पांच वर्षों में कुल ऋण 70 प्रतिशत से अधिक था और सितम्बर 2011 के अंत में 75.7 प्रतिशत रहा।

6.67 भारतीय कुल विदेशी ऋण में ईसीबी का हिस्सा विगत वर्षों की तुलना में पर्याप्त रूप से बढ़ा है। चूंकि मार्च 2001 के अंत

और मार्च 2006 के अंत के बीच, कुल विदेशी ऋण में विदेशी वाणिज्यिक उधार का हिस्सा 24.1 प्रतिशत से घटकर 19.0 प्रतिशत हो गया; ऐसी उधारों में यौगिक वार्षिक वृद्धि 1.7 प्रतिशत थी। तथापि, मार्च 2006 के अंत और मार्च 2011 के अंत के बीच, ईसीबी की सितम्बर 2011 के अंत में कुल विदेशी ऋण में हिस्सेदारी बढ़कर 30.3 प्रतिशत हुई इसके साथ 27.4 प्रतिशत की यौगिक वार्षिक वृद्धि दर दर्ज की। हाल ही में ईसीबी में वृद्धि रुपए के अवमूल्यन को देखते हुए चिंता का विषय बनी है क्योंकि इसका अर्थ होगा, रुपए के सन्दर्भ में अधिक ऋण सेवाभार को कॉरपोरेट उधारकर्ता के लाभप्रदता और तुलनपत्र को प्रभावित कर सके।

6.69 सारणी 6.13 में मुख्य विदेशी ऋण संकेतक दिए गए हैं। भारतीय विदेशी मुद्रा प्रारक्षित भण्डार कुल विदेशी ऋण स्टॉक का मार्च 2011 के अंत में 99.5 प्रतिशत की तुलना में सितम्बर 2011 के अंत में 95.4 प्रतिशत था। अल्पावधिक विदेशी ऋण और विदेशी मुद्रा विनिमय प्रारक्षित भण्डार मार्च 2011 के अंत में 21.3 प्रतिशत की तुलना में सितम्बर 2011 के अंत में 22.9 प्रतिशत था। रियायती ऋण और कुल विदेशी ऋण अनुपात लगातार घटा और मार्च 2011 अंत में 15.5 प्रतिशत की तुलना में सितम्बर 2011 के अंत में 14.7 प्रतिशत हो गया।

6.70 भारतीय विदेशी ऋण प्रबन्धयोग्य सीमाओं में है, जैसाकि विदेशी ऋण और सघउ अनुपात 17.8 प्रतिशत और 2010-11 में ऋण सेवा अनुपात 4.2 प्रतिशत से संकेत मिलता है। यह सरकार की विदेशी ऋण प्रबन्धन नीति के कारण सम्भव हुआ है जोकि दीर्घ और अल्पावधि ऋण मॉनिटरिंग, दीर्घ परिपक्वता वाले रियायती शर्तों पर सम्प्रभु ऋण जुटाने, अंतिम उपयोग और आल-इन-कास्ट नियंत्रणों के माध्यम से ईसीबी नियमित करने तथा एनआरआई जमाराशियों पर ब्याज दरों के यौक्तिकीकरण पर जोर देता है।

सारणी 6.13 : भारत के मुख्य विदेशी ऋण संकेतक (प्रतिशत)

वर्ष	विदेशी ऋण ( बिलियन अमरीकी डालर )	जीडीपी की तुलना में कुल विदेशी ऋण	ऋण शोधन अनुपात	कुल विदेशी ऋण की तुलना में विदेशी प्रारक्षित निधियां	कुल विदेशी ऋण की तुलना में रियायती ऋण	विदेशी विनिमय प्रारक्षित निधियों की तुलना में अल्पावधि विदेशी ऋण* का अनुपात	कुल ऋण की तुलना में अल्पावधि विदेशी ऋण
1	2	3	4	5	6	7	8
1990-1	83.8	28.7	35.3	7.0	45.9	146.5	10.2
1995-6	93.7	26.9	26.2	23.1	44.7	23.2	5.4
2000-1	101.3	22.5	16.6	41.7	35.4	8.6	3.6
2005-6	139.1	16.8	10.1#	109.0	28.4	12.9	14.1
2006-7	172.4	17.5	4.7	115.6	23.0	14.1	16.4
2007-8	224.4	18.0	4.8	138.0	19.7	14.8	20.4
2008-9	224.5	20.3	4.4	112.1	18.7	17.2	19.2
2009-10	261.0	18.3	5.5	106.9	16.8	18.8	20.0
2010-11PR	306.4	17.8	4.2	99.5	15.5	21.3	21.2**
जून 2011 के अंत में आंसं.	317.5	-	4.6	99.6	15.1	21.7	21.6
सित. 2011 के अंत में त्व.अ.	326.6	-	-	95.4	14.7	22.9	21.9

स्रोत: वित्त मंत्रालय और आरबीआई

टिप्पणी : -खंडित अवधि हेतु नहीं निकाले गए हैं। आंसं. : आंशिक संशोधित त्व.अ.: त्वरित अनुमान

\*: अल्पावधि ऋण मूल रूप से परिपक्वता पर आधारित है

\*\*: शेष परिपक्वता पर आधारित, अल्पावधि ऋण ( 129.1 बिलियन अमरीकी डालर ) मार्च 2011 के अन्त में कुल विदेशी ऋण का 42.2 प्रतिशत है ( आरबीआई प्रेस विज्ञप्ति दि. 30 जून, 2011 )। शेष परिपक्वता द्वारा अल्पावधि ऋण में एव वर्ष तक की मूल परिपक्वता सहित-अल्पावधि ऋण के सभी संघटक शामिल हैं तथा एक वर्ष संदर्भ अवधि के दौरान अनिवासी भारतीयों की जमा राशि सहित-दीर्घावधि ऋण के अन्तर्गत राशि देय है।

#: 6.3 प्रतिशत निकाला गया है जिसमें 7.1 बिलियन अमरीकी डालर के भारत सहस्त्राब्दि जमा राशियों ( आईएमडी ) के पुनर्भुगतान और 23.5 मिलियन अमरीकी डालर के पूर्वभुगतान को शामिल नहीं किया गया है। ऋण-सेवा अनुपात विदेशी मौजूदा प्राप्तियों ( सरकारी अन्तरणों का निवल ) के सम्बन्ध में सकल ऋण सेवा का अनुपात है।

## अन्तर्राष्ट्रीय तुलना

6.71 विश्व बैंक वैश्विक विकास वित्त 2012 में दिए गए आंकड़ों के आधार पर, जिसमें वर्ष 2010 की ऋण संख्या है और दो वर्ष का विलम्ब हैं; बीस सबसे अधिक ऋणग्रस्त विकासशील देशों का विदेशी ऋण की अन्तर्राष्ट्रीय तुलना दर्शाती है कि भारत विदेशी ऋण स्टॉक के सन्दर्भ में 2010 में चीन, रूस, ब्राजील, टर्की के बाद पांचवां सबसे बड़ा ऋण ग्रस्त देश है। भारतीय विदेशी ऋण स्टॉक का सकल राष्ट्रीय आय (जीएनआई) के साथ अनुपात 16.9 प्रतिशत है जो चौथा सबसे कम है और चीन 9.3 प्रतिशत के साथ सबसे कम है (सारणी 6.14)।

6.72 विदेशी मुद्रा प्रारक्षित भण्डार द्वारा प्रदत्त विदेशी ऋण कवर के सन्दर्भ में, चीन, थाईलैण्ड, मलेशिया और रूस के बाद भारत

की स्थिति 103.5 प्रतिशत के साथ पांचवीं सबसे बड़ी है। सभी देशों के कुल विदेशी ऋण में अल्पावधिक ऋण हिस्सेदारी की तुलना प्रदर्शित करती है कि भारत की स्थिति निम्नतम आठवीं है और पाकिस्तान का निम्नतम अनुपात है।

## चुनौतियां और दृष्टिकोण

6.73 सघड के 8 प्रतिशत से अधिक व्यापार घाटा और 3 प्रतिशत से अधिक सीएडी, देश के भुगतान संतुलन में बढ़ रहे असंतुलन का संकेत है। अतः अनुत्पादनकारी आयात जैसे सोना और उपभोक्ता वस्तुओं को सन्तुलन बहाली के लिए कम किए जाने की संभावना है। इस सन्दर्भ में, रुपए की कुछ कमजोरी एक सकारात्मक घटना है क्योंकि यह आखिरकार निर्यात प्रतिस्पर्धा बढ़ाकर और आयात घटाकर व्यापार सन्तुलन सुधारता है।

सारणी 6.14 : शीर्ष 20 ऋण प्राप्तकर्ता विकासशील देश 2010 की अंतरराष्ट्रीय तुलना					
क्र. सं.	देश	कुल विदेशी ऋण स्टॉक (मिलियन अमरीकी डॉलर)	जीएनआई की कुल ऋण (प्रतिशत)	कुल विदेशी ऋण के सम्बन्ध में अल्पावधि (प्रतिशत)	कुल ऋण के सम्बन्ध में विदेशी मुद्रा भण्डार (प्रतिशत)
1	2	3	4	5	6
1	चीन	548551	9.3	63.4	531.2
2	रूसी संघ	384740	26.9	10.1	124.6
3	ब्राजील	346978	16.9	18.9	83.2
4	तुर्की	293872	40.4	26.6	29.3
5	भारत	290282	16.9	19.4	103.5
6	मेक्सिको	200081	19.5	19.5	60.3
7	इंडोनेशिया	179064	26.1	17.5	53.7
8	अर्जेन्टिना	127849	36.1	27.4	40.8
9	रोमानिया	121505	76.4	20.6	39.5
10	कजाखिस्तान	118723	94.3	7.6	23.8
11	यूक्रेन	116808	85.9	22.7	29.6
12	चिली	86349	45.9	30	32.2
13	मलेशिया	81497	35.4	43	130.7
14	फिलिपीन्स	72337	36.2	8.7	86.2
15	थाइलैंड	71263	23.4	54	241.4
16	कोलम्बिया	63064	22.8	13	44.5
17	पाकिस्तान	56773	31.3	4	30.4
18	वेनेजुएला	55572	14.3	27.8	53.4
19	बुल्गारिया	48077	104.8	32	35.8
20	साउथ अफ्रीका	45165	12.7	27.2	97

स्रोत : विश्व बैंक, ग्लोबल डिवलपमेंट फाइनेंस, 2012

टिप्पणी : सारणी में कॉलम सं. 3 में प्रस्तुत ऋण की मात्रा के आधार पर देशों को क्रमबद्ध किया गया है।

6.74 अस्थिर एफआईआई प्रवाह की उच्च हिस्सेदारी के साथ उच्च व्यापार और मौजूदा लेखा घाटा, भारतीय बीओपी को विदेशी दबाव के प्रति असुरक्षित बना रहे हैं। एफडीआई के संबंध में पूंजी प्रवाह के संघटन को सुधारने के लिए अधिक ध्यान देने की जरूरत है।

6.75 विगत कुछ वर्षों में रुपए में अधिक अस्थिरता आई है। यह अस्थिरता निवेशकों के आत्मविश्वास को डगमगाती है और कॉर्पोरेट तुलन पत्रों के लिए अर्थापत्तियां हैं तथा जब मुद्रा का

अवमूल्यन हो रहा हो तब इसीबी के सम्बन्ध में उच्च प्रकटन के मामले में लाभ प्रदत्ता। अतः रुपए की अस्थिरता को रोकने के लिए अधिक प्रभावी रवैया अपनाना आवश्यक है।

6.76 विदेशी दबाव तथा पूंजी विपर्यय की स्थिति में स्थानीय मुद्रा के हास को रोकने में विदेशी मुद्रा भण्डार का आकार एक बाध्यकारी कारक हो सकता है। इसलिए यह परमावश्यक है कि पूंजी प्रवाह की तेजी के दौरान जबकि करैसी मूल्यवृद्धि हेतु हम दबाव में है, विदेशी मुद्रा भण्डार स्तर को बनाने हेतु उपाय किए जाएं।